११

॥ ॐ नमः ॐ जी गुरु गुर स्वन
पजी राद्धि प्राकार लगनी से
वी वा ह सिलौ वा हे वा ह
म स पलि ताना फ़ु टे ना फाटे
गर गार स्वना पजी राद्धि को
रा ला॥ = ॥ = ॥ = ॥

ॐनम भगली चउर कावुसी
कानकं दीर कावुन देवुता ।।
१ तुलीसा सता दे
श्री तुली सुगतैलौ ।। २ मसानील
घा घ काउवीव दहोचराघउ
घउ ।। फटाल वुग्र छेव ।।

श्रीर घचंदनमाठाद पा
र घचंदणा डेह जु टापूह
प[illegible]मात[illegible] गडोउ गावना
डोनाश्रेणार गे गोपाश्रेगह
लगउ कुवंत नोलश्रामंगल

वात कनेचे पाद

ले पा॥ व न ॐ! श्री चार्क श्री ग
च्च मा मा पत्रु धं न धा न
धं न धं न
केवल राम को डी आप
त्तीतरा य के वा न पा म।
काला कार र ख म मेर मा
धा ण पाइ के ला रा त न
रां वा इ चौ दी रा त न रा वा
इ के रू कम ण को आं
नं ज ग म चा न ण त को
3 पा ओ मू र्य चं दे वं द मूर्य
चा रे या वा

पोथेसधसाहकुंवैनुमोक्षी
मंगलं॥

मालजितराउँपजावदेसमं
सँधूसंदेताल सँधूरामवधा
यपासमधत्तैलैपासुमख
सँधूदालहोरतरवतहोसज
दवसंदे ... ककत्तीउकरांया
धरेजिनादीकत्थ्याकीदा
लेसाधकेनेजीचत्तलहत्थ
कत्तीउकरांयाधरेचमालउ
सारगजलयादेखसमहन

ए नि कली भुलरे टीरूप हृयार
कटी छुटी स्युंदरों लै यापेर नि ठ
हउ त्ये संधूलो भयाधररखा
ल यविवा हउ त्ये न पीप ले
यापरू द्रहोयाजन्नूला हति
लै पुत्र भुलर जाते जाह विरडो
विरउ गुलीगलउ मरामादी
सरला यउ दीराजा विरायाल
दहाकाउत्येनु यज्ञ संधउ
द्वैवैठल्ल हो रजद्दवै ठलानि

इस्तृत्यकडघोडासंधूलया
श्रुरगनेसंधूसाहरैयतसमा
साधयासुरोयारवन्नार्वेहसं
धूरप्राायाभुलरीसमभालल
याउगराहचीमाचठाविडउवडा
यचवाजवामिलयाघरश्राय
जाऊल्लीचरप्रापरोनहींता
पतिलहायऊल्लीपाणीढोया
गलविचपल्लूपायमहीडुहाउ

लीदोहीफिरीगडकोटवेहे
कुजाहसूरउसारीगजुली
पर्वतादेसंवायहरवंवेहरधौ
लदेगायत्रीवुसेवाहदेईमो
ईवेघुपानदिवाईचूदनया
नतिहौडासीविद्धसतलुकज
वहदीवाहजिदलासंधूजंम
याउसलापुजामाहमतसं
वलीवडाहोयाविचदेशाही

ॐ

श्री

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ क
सा निरंजन नरंकार अप पे खर
ह कं म्म पा आई ईश्वर ते गौ पौरा
म जगत् तदाँ हील म्मयां रचु
पन्ना ईश्वर गड्डो सुख चौ ब्रह्म
पा अंकालों में काल देव घर
जे पाल देजं म्म या तदाँ दशा रपा
तपी स्व जं म्म पा राम दह सर मा
र पा ✱ लंका दस्ती ढाह कुंज

१६

| ८ | १ | ६ |
| --- | --- | --- |
| ९ | ३ | ५ |
| ३ | ११ | ४ |

घोघवी की दं रिमजै वा टै पा वलेप
र । परा उघोरपा उधारि वैठ सुमरनके
रिउ ठि चलै विनुषूटी । ले तौ विनुके
सपक फिर आवैं मंत्र डौन मो मगा व
ते रूप द्व रूपा इ नाना रूप घरा इ
सद सकौ तुकौ इ जो हि पा का इ ठ ठ
खो दा ॥ १ ॥ । संधूर गंध का हरता
मन तिल ॥ । ते सम मैले लगा तप
ै है मैल के प न चि ले स

ति

नं

रू

१२

वरतअसत्यीइ ।।।। पिकला इत
३ तेसीतंपठले ।।१।। मंगराकीत्र
ढोरोचनचतू एतेमलिकपलेपै
दवतंतेमे ।।१।। अग्निदहतती कोपचै
मैघरोवलहाथ ।।तीजी जीतंती वाचु
तिलादेह पिपपतिसतमै इस्वरोमहेप
एतेसांमनन्वीमह देवकीआज्ञा ।।१।।
इसमंत्र कोप्रपचमेपठले ।।१०।।१।।

मोथा। सरस्वति मिलावा। काव वकेफूल। अ
ककेफूल। टालए ते मेतधूपदीजइ चौ
टामंसाला। पमंसे कीडे विषककेसमजारे
सत्य॥१॥ भंगरे की जड़) गोरोचन। घृत।
एते मेतिसापले (पि तिलक करे दिव्य संमे
॥१॥ विकट नारसिंह विकट मेत। रक्तलोचन
विकट दाढ़ः चमचत विजुली पाट ते कुंभांडक
मंत्र इस्वरोवाच॥१॥ नार १०८ जप। प्रतदिन
न हो पट स कैला १०॥ ... ॥१

१८ ॐ अभ्राक ढाक कुमारी बाल नरजोबन तूसत जपिआरी ॥ समारेवा मेगा मूठे की रक्त का करे विनास ॥ कवीन छोडे समारेकनी का पास गुरकी ०॥१॥ रवे सेतवार अर्क फुल ढक कावाल वा मा गुडर सेन गुट का कृत्या ॥ तस्य दृष्ट्वा स्यं मृत्र स्त्रपं भवति ॥१॥

मारास्

३६

फोले दीदा रू ॥ अफीम षरी का मिसरी की
जौति दिन ७ ठ का गदीनी कूदे रह विच
घाटे ... ती ३ रु विकर बेकूटे रका नी
दे वि ग्रे ठ निव घ से ए कानी कु रे ३ ॥
ॐ का ३ ह दे ह का मख्या माडी ग्रा दफर ष गु
रू कुलो डी ॥ ग्रोगे ता रापी के ता रा ल का न
ग री पि ड या ह का रा ॥ ॐ म दूध म्रा डी कया
ल्याई मात लो क सें वा सदे ३ की बेटी ल्याई पता
ल नगरी राजा बासक नाग की बेटी ल्याई जो
य ... ह ती ... ल्याई ... ल वा ... ल ... की ल्याई

३३ की ०।।। रववार के दिन रतका की १०१ ए
का कस ३ एकी माला वणावे सध्ह रकी पुडी ए काल पके
३ सत ऊपर ए कमाला राजे फेरे दिन ७ सत ता
व डीस हो य॥ १॥ ४ चार सिर सा ही व
ड दा दुधु॥ सिर साही पारा १। वड दे दुध वि
च पाइय के कासी दे हने विच घोट ।।
ता२ ले ड़ा इता पय से वां गु गोली कर
ए सि जपा व सा टा १।। कन क दा गु नेके
दु यलो येकरो ... घ गोली पा व एी पाथी
लयके अगा षडी लोये जोड के अ ... ड़ी
पा वलीजा ... के ... १ दुय ...

२ पारा
२ पारा
२ पारा
२ हरताल
३ सखीया
३ तांवा
४ तांवा
४ तांवा

४ कपूरादी
५ मृगीजिवालगी
५ सूलकी
५ सूलकी
५ सूलकी
५ सिरपीडाकी
६ अंजन
६ मोहनीमंत्र
६ ७ आवेवसामंत्र
६ ७ हौंजामंत्र

२७

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | जाड़ा | ११ | नजरका जंत्र |
| ७ | आवीवहूलमं | १२ | स्त्रीगर्भ ठीका जंत्र |
| ८ | सर्पका जाड़ा | १२ | विसका जंत्र |
| ८ | [illegible] | १२ | विसका |
| ८ | अगन हूला | १३ | पुत्रमरजां देसायजंत्र |
| ८ | गोका जाड़ा॥ | १३ | ल्पहारीका जंत्र |
| ८ | जाड़ा | १३ | नजरका जंत्र |
| ९ | वंजजंत्र २ | १४ | तापका जंत्र |
| १० | गोका जंत्र | १४ | सर्वका जंत्र |
| १० | कुतेवगीदका जं | | |

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ विध पारेकी ॥ पंज
सिरसाही आणे पारा ॥ पंज सिरसाही आ
वल्ले सारा । त्रै सिरसाही आणे अकु ॥
एरु नाऊ कवारे पवेनज कु ॥ सिमलुरवास
सिरसाही दो ३॥ को हरद्धु मिला स्रु ता
होय ॥ गंठी एहु वितुपरेन कटेकि ॥ ग णा सिर
ऊलेचन सिरसाही एक ॥ कूटी कर साही र
ला णाके उटी देष ॥ हमोपरूलकी णा एक कु ॥
ठा ॥ सिलपपार अपरका वटा ॥ जवास

१ मोषरलभ सुदोजापवे॥धायन मृत्त
सोदेधमालतातेसुधहोवे दर सालापव
सएकीस २१ षरलजवकरे तवनिस
कलंकी मरे॥ देवेउसकालेपनसात
कुटरूईसाष्ठ॥ षोदेधरती॥ऊपल
क [illegible]रे॥वीचभरतीगोसपाकी करे॥जव
होथेदेयषुदायी॥तवनानकबोले
पतानषाझी॥ तव सोतापहरकी देम
ड़ासगुरपरसादे स्मावे रास॥ नि १

तकलेकीवहुतवमरे॥तीमचोरकुं क
दनकरे॥नानकवोलेविरलाकरे॥
वोलेनाहीआपछपावे॥जाताहीया०
वरनपावेपारेकीकीमतकरीयेम
ही॥१॥दूसरीविधपारेकी॥एकसिरसा
हीपारा१ सिरसाहीगंधकआवलेसा
रु१ दुहाथोकादारवरलकरणापार
रागंधकदोवे॰॰॰रल जाएताक थाक

पी

२२ खरतेकाढो॥ २ दोसिरसाहीमुरदासिं
घुलैकेषी हला॥ एकासिरसाहीमुरदासिं
घेसेठ पावणा॥ कुठालीविच ऊपर
पारापावणा॥ एकासिरसाहीमुरदासिं
घु ऊपरपावणा॥ सुतयाँकीकुठार
लीआ ऊपररखणी॥ विचमतस
कदारसनचोढ़देणा॥ कुठालीनू
आघडीचारकीअदेणी॥ १॥ २

तीसरी विध पारेकी॥ पारापयसा भर॥ व
ड का दूधपयसा भर॥ दुसाथी का दारव
रू तकरैं षरलके वीच तिलाके फूलपा
वे वछीके मूजा विच मेवके॥ डली कर केसरु
वे॥ गेहूके आटे कै [illegible] वणावे उनके
वीच डली धरै [illegible] पकावे ७ पाघीया
जान के उना दे अंगयार कर के उना दे
वीच रोटी धरै लाल होयतव कडै॥ २॥
स ट ताल की विधा॥ [illegible] ताल को नी

कौसी दे
छ ने वि
तेकरी
कार दे से
टैन पा
दुध पव
डे ५
पक के
थिनी सी
वणाके

३

वृकेरस मै खरल करे पीके तिलाके सलि
यादी स्वा ह आधी ऊपर आधी तले देके पी
कर के खरल कर उसके आंच पल रखा र
की दे मधम॥१॥ विध संखीये की॥ संखी या थो
डा र के वृध नाल खरल करे थोडा सा गूं
गा तोड के उसके बीच डली धरे संपट क
र फूके॥१॥ अथ विध तांवेसर की॥ तावे के
पते करे॥ कली के पते करे॥ सिरसा ही कली

३

के उसक चूक डोंपा गा वे॥ जमाल गोटे के सा

करनीरसोपीसे३सचूकडेउपरए
कपततावेका॥कपतकलीकीजमाल
गोटालायकरधरे३सचूकडेकामुष
मेलदे॥चीथडेउपरलपेटकेफूकदे
या॥४॥छिलकाकोत्याग मुकावेपाछे
केकेपाणीमेंपावे नितारकेसे
ता
विधवृतरीतांवेवी॥पयसेकोनीवूके

ता॥से वे॥क विधा॥

रससाथ फीमलटे टै॥कत्ती कीकटेरी
स्रीकरवा वेपयसे को वीचधरम् इ
मेलेस पटकरे पंजसेर पजं लीगो
से उन्नामे फू के॥।॥ विधतावेकी॥कुकुभंगे
की [illegible] कारवीव पंपसारा ष पाघी अप
रधरे आघी लंगदी सेठदे आघी अप
रदै पाथीके उदालैगंलकोगोसेदेके जं
फूके॥।॥ विघकफूरवनावतोकी॥चंद

लुंगदी

४

४

रस्तुलयणालयके षरलकरणासत
१दिनषरलदेविचकेलेरापाणीपाव
णा॥जेपंजमासेचंदरस्तु होयतामासा
स्तुसककपूरपावणा॥षरलदेविच्चरती
कस्तूरीचाररतीअतलगुलावदा॥नाले
गुलावदापाणीचारपयसेभरा। मलकेव
टकेछावेस्तुकावणे॥१॥विषघातमू
षीजिवालणकी॥सहतस्तुहागाघीय
स्तुपीधातकीजीव॥१॥

अथचूरणस्हलका॥१पपसमरबच॥
१पपसमरवायविडंग॥७सतमासेहिं
ग॥४कार पपसेमरसुंठ॥ततेपाणी
नालफके॥१॥दूसरीस्हलकी॥जेडकी
लुंगपवावेभ्राकाहोय॥।तीसरीस्ह
लकी॥छमकमभोलीकेफूलकीदा
लविचलीषवावे॥१॥दाफूसिरपीड़ा
का॥वासकेवीडलै उनकोअदरकके
रसमेपीसेगोलीवाधनासले॥।१स

अंजनस्याषीका॥ दोयपयसे भूफट
कड़ी॥ पयस भर सोरा॥ फटकड़ी की
कोरीठीकरी के बीच रजाके षीलक
रे॥ दो साथो काकोपीसके अंजन
करै॥१॥ ऊँवारा सहर होतेरामाई हाटकी
माटीमसाणकीकाइ प्रथपठ मासो
मंगलवार॥ मूठा टेके न घर केद्वार
षड़ीसु षन बयठी सु षजवलगन

देखेमासामृषगुरकीसक्तहमारीम
तोफुरहेपंत्रईचरोकाचात्रअथजप
विध॥जप१०१वारासरस्तोवगीकरा
णे५तेराराहीकेदाणे१३हटदैत्रगो
मिटीचीन्चीनालपटलयाणी॥सिवेकी
स्वासलैणी॥चारोकेलयकेमंगतवा
रकेदिन॥३नकेवीचथोडोसापाणी
पावणा॥जपकरणनालौनापढ्याजा

रणा फूलावणा अथवा ३ तेसि टणा॥ घडापि
छे फेरआणा॥१॥ आवेव ह्रणा का मंत्र॥ छेप
ड कीमि टी कृ ये की का ई इ स आ वे के आ
च न ला ही गे ता श्री गोरष नाथ की दुहाई॥
गुरु की स०॥१॥ छेडणा मंत्र॥ नीले वस्त्र प
यन के ३ ल टी पाया कछे मय विस
र छेड या मंत्र फ छोडी तणा बे तग रु २०१
॥ झाडा॥ फिर मृ ही की छि पाली ह

जाली

ीग्वंतन्त्रतीकीपा ल्ली॥ नाजरेना
पीड़ाकरे काली चौद्दह घोड़े॥ र
डीर ताजा एगीठाल्लीगोल्लीकूलच्छि
धूरूफिटमुहूँ वुरिमा वी॥
हएवंतवीरकी रूआणीमु२०॥ ॐ
वारापवरत्ता तेरा माई ऊठो सोमा
डयोकरोनडाई मेरीवांधीनकरो
ताश्रीगोरषनाथकीदुहाई॥ ३०॥

१

१

सरूपकागजाणी। विष्णु विसी अरु
विष्णु सरे जल रूपा णी गंगा जल
जाणी ओं इन्द्र इंद्राणी ओं इन्द्रा सण
सिंघासण मुनि विशे ते पड़े अष्ट
कुली वासके तक्षक कीलाणी
ओं विष्णु विसी अरु विष्णु सरे
जो विष्णु सरे ना ही ताँ वचना विष्णु
रूप मुनी की आणी अनतकारे

को।पिला ई धि काटा निरमलु
जोगि ॥१॥ ॐ आगीया बिचाल ब
यताल वयठा पता ल ते र मुष से नि
कसे स वा म ण का काल जाल जाल
मसाण। लंको ठी मे कुः क डा ति स
को भी जाल पत घो व य ठे र राजा
को जाल राजा की राणी को जाल
सजण को राष दुस मण को जाल
गुरु की सक्ते हमारी भक्ते फुरो ॥१॥

ॐ जल बांधो जलो पी बांधो बांधो माप
न कछो बाल रा कू सको विसंतर बांधो
सापो पेरा भाई हाथी दिष परजले सप
देखि तेवृ ऊजाय पडु सायी हलवत कीछ
म भस्मंत दोय जाय गुरु की ॥ ॥ ॐ नंगा ज
मु नास रस्वती धेन चरावे गोरष जती ना
मुख आवे ना दुषे षुरा श्री लाल गोरष
की दोहो फिरी गुरु ॥ २ ॥ रवबार कीना

यकेपाणीएकोतरवारपलंजके१.१ छू
टेदेगो॥१॥ झाडा॥ ददुकनेडूनारवाकछ
राली पल्लूतवर्क्की मासस्तर्फ दीपंजेमसूमा
मृतगुरकीश०॥१॥ जंबवांमकंा॥ अ०गं
ध सेतीलिषणा॥ केसरपूरारसाकस्तू क
रीगोरोचन। संधूराचोया। रक्तांचं दन॥
सियाही॥ इसनानालेलिषणारूपेविचप
डीवाणा मलवांधणा॥१॥ \\\\ \\\\ \\\\

९

बांसका ५०

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | ११ | ३८ | १ |
| १७ | २ | ७ | १२ |
| ३ | ३५ | ९ | ६ |
| १० | ५ | ४ | ३८१ |

बांसका ५०

| | | | |
|---|---|---|---|
| २० | २१ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १४ | २३ |
| १६ | २१ | ८ | १ |
| ४ | ५ | २२ | २५ |

अथ जंत्र मन्त्रोका॥ गोरी गऊ का दु
धएक रंगीकाउसंमी कचीलसी कर
लीजंत्रविवधी पके कसारतीछिटदे

ऐलसीकी ।वरतण।विचपायकेजितदर
वाजेगऊआनिकलण।उसदरबाजेव
रतणगडणानालेउांघेईकिटेदेण।१।

मन्ये का१०० २०

| ४२ | ४५ | २ | ७ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | ४६ | ४५ |
| ४८ | ४३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ४४ | ४७ |

अथडेब्रकु
तेदलकाचे
का७थवाशि
दडुका।।पि
पलकेपत
९सतउना

१०

अपरलिषकेवांधणा॥ गुतेकाहलकायेका।०

| ८७ | ८७ | ८७ | ८७ | |
|---|---|---|---|---|
| ८७ | ८७ | ८७ | ८७ | |
| ८७ | ८७ | ८७ | ८७ | |
| ८७ | ८७ | ८७ | ८७ | |

अथजंत्रनत्र का॥समकी य[illegible]सेन्दूलिष केधोयके॥ पि पालणा [illegible]लेगल वांधणा॥अ

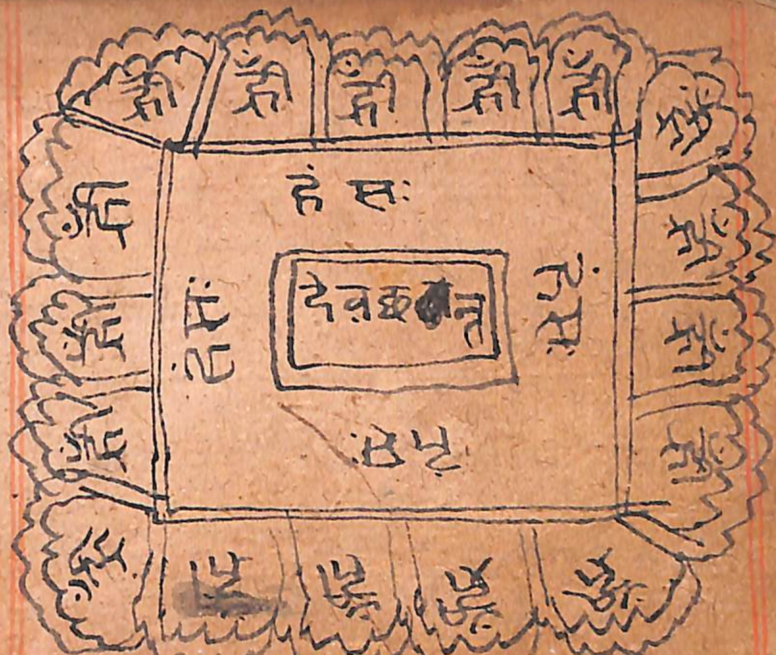
छाहोया॥१॥जंत्र[illegible]आगे॥५५॥

नजर का ॥१॥ ३४

| ८ | ११ | १४ | १ |
|---|---|---|---|
| १३ | २ | ७ | १२ |
| ३ | १६ | ९ | ६ |
| १० | ५ | ४ | १५ |

११

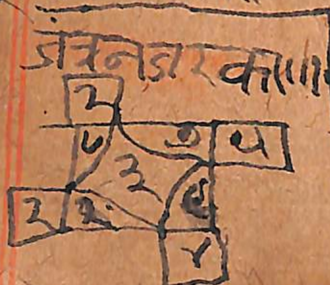
जंत्र इस्त्री गरभी का ॥ पाती
विच लिष के
धोय के पियावे
तो नातेजंत्र
दिस अंग लिष
के दिषावै तो
[illegible]
फेर
पके
पल
१०


हं सः
देवदत्त

रसजंत्रकोलिषकेमलवांधेत्रिस
केपुत्रमरजातेसोय ॥१॥ । । ८५

~~अथजंत्रस्यात्रसेका~~ ॥ अथजंत्रस्यत्ता
१३ सीका ॥१॥

जंत्रनदारका ॥ ॥






१३

कबिसुखदेउ॥दो॰

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ अथ पहामुद्री
क भाषा लिष्यते॥ लं बोदर जाको कहे
वारणा को मुख जाहि मं गलदाई जग
त के प्रथम में वंदे ताहि॥१॥दो॥ हरि गु
रु गुरु हरि हरि गुरु एक समान॥ हरि
गुरु मैं अंतर नहीं हरि गुरु रूप को जा
नि २ परमात मई स्वर भाविव नान॥
मुद्राय लेख लिखा एह भजात

कोमिटे नलाखेउ पाइ२ चउपई
रामचंद्र बनवासे लये लछमनसी
असंगतिहिगए लंकापति दससीस
कटाये सुरपति मूलि सहसभगपा
१४ चौ गजअंबरहार चीरुनपावे
कासपारधोवा नलगावे सोखिमाइभ
गवानकसाई देहधरे ति लिलेख
लिखाई चौ डिष्टपं तिनहूहिरले
है

खाजोअरूपुतिजानअलेखा॥ दो
इगिआनलेखजोजानैदुखसुखहो
इनमनमैआनै.६ दो रिखसमुद्र
कपंडितभए जिहिंत्रैकालगिआन
॥तंहनससमुनरिनारिकेतिहिम
रै नकोबखान७ सुखदेसिलीनेक
रीभाषातानिबनाइ॥ पढैसमुद्र
कभाषमैअरथसकलतिहिआइ८

दो॥ सिव संभ्रमाकोकहे पार्वतीप
तिजाहि सिवसमुंडकप्रियप्रहीम
नवचवदंतिताहि ए दो उत्तम म
अधम ध्यमें जे लंछन है नरिनारि प्रिंनभि
नसमकहतहो गुनजे मनमैधारि १॥न
चौ०॥ सुभदिनमहत्तनिकछ्ववीचारि
सोमवारिअथवावाकुधवारि॥ प्रातस
मैमंगलसोपरवैनरनारिकेलछनदे

रवे ११ चौ०॥ प्रथमैलछनपुरुखनि
सारेप्रमानवुधआपनीवीचारै दं
तकेस्देखेनखदारीप्रथमैमअधि
भलीवीचारी १२ चौ०॥ हीनआरव
लजाकीआहिलंछनभलेकरैकि
आताहि मुनि समुझकजाकोइन
करै प्रथमपतटैमैऐसैअहै॥१३॥
पाउ अथैलछनवरननं॥ चौ०॥ जाकेतै

कहि पाउत मान होहि चीकोली सो
भावान सुद्ध लाल पसीनानादि
कुंकुम रमी होवै तिहमास॥१४ चौ०॥
क बहुतननारी निसी होइ॥उ चेलंबे
उत मसोइ सत्र ते उत मजानो ता
हू एहि विधि पाउ होहि जादू १५ दो॥
जाके पाउ क्षाजसे होय के हू [illegible] टप
होवै कोइ [illegible] डीगमरू के पग जाहि

क

केनारीनिसैसीपगजाहि १६॥ चौ॥
केसुपेदुपरसेअचलैजोतीछुनक
ननदालिझीहिसो५॥ सामुद्रक
रिखकीओबखानुवाकेबचनस
तकरमान॥१७॥ दो०॥ अंकसरेख
खगातलेताकोराजाजान॥ मोटा
जाहिअंगहै ताहिअरोग
पछान॥१८॥ दो॥ कठिनकुरदेखी

भै दो अंग ठे जाहि॥ सदा फिरे वह
पंथ मैं टिकनु न लै वै ताहि॥ १९॥
दो॥ टूटो डी गाहू का सो जाहि अं
ग ठा होय छोटो वहु ता जाहि फु
न अति दुख पावै सा इ॥ २०॥ दो॥ जा
हि अंग ठा चउ गिरौ लछ उ द
र अति लाल॥ ताको राजा ता
नीए छत्र सीस मौल माला॥ २१॥

दो॥ कै कनिकटकातजीतीलावी
जाकीहोयछोटाहोयजंगहठाजिति
भागवानहयसोयाँ॥२२॥दोनाडीगी
सकीअंगुलीमाकहाडेसोनाति
वहुतदुखीआधीनुअरुरिणोजो
नुतताहि॥२३॥अथनखलछन॥
चौ॥ टूटेउजलनखजितिजानो॥दु
राचारिदुखीतिहिमानोवुरेदेखी

अतहैनरवजाहि धनकोभोगुन
होवैताहि॥२४॥चौ॥ मोटेडीगेना
हिसमाननरवविकारदालि
डीजान॥नरवपीलेजाहूकेहोयप
वह मह तिक्षाकरहैसोइ॥२५॥चौ॥
लालीलीयेहैनरवजाहिराजाम
हैभेदुकछुनाहिसंरवसीपसीपजै
सैनरवमाहिलालीलीयेरवहैजाहि॥

॥२६॥ चौ॥ हो ए सुखी अरु सुमन जा
नु राजा होय वड़ी सचु मानु ला
ली ली ए रूप त ले हो इ जिहि ऐसे
न र वराजा सोय २७॥ अथ जंघा के लक्ष
ण चौ॥ वहुत रोम जंघा जिहि हो
इ दलिद्री वि भागी सोय॥ एक रोम
जंघा है जा हू भूपत राजा ज्ञानो ता
हू॥२८॥ चौ॥ दो य रोम जंघा जिहि

अतिधनवानजानतुसो इजिहि
जंघारोमतीनहैचारिभागाहीन
तेताहिविचारि ॥२९॥ चौ ॥ अपनी
तुजंघनबहुचलाइराजाजानुतुमाताहि
ई ॥ मिरग मकुलीसीजघेजाहिरा
ओवहैजानुमनुनाहि ॥३०॥ चौ ॥ गी
दरजंघाहैजाकोभागहीनतुममानो
ताकोलंबीबहुतपतलीजंघजाहु ॥

वहपरदेसचलावेताहु ३१॥चौ
पापीहोयनिंदपरकुरैमउनक
रैपरनारनटरै॥छं॥समानज
घजिहिसयभागहीनतुमजानो
सोइ॥३२॥चौ॥जाकीजंघकागसमा
नमरैकालतारकेढिगजान॥हि
वधिआउजंघैदजाहिहैधनुता
नुवतुतधनुताहि॥३३॥अथचाल
लछनादो॥तेताहुसमपरगति

चलैस्रु राज्ञा ज्ञान साम्भुङ्कनामा
ज्रुरिखतिहि इउ कीयो वखान ३४
चौ०॥ सिंघवचन साघो ज्रुले सोय
मद्रुनुधनुकावहूतटलैकागस्रउ
र उल्टकीचालचलैनेबहुतुना
सिधनुमालि॥३५॥ द्रुखुरोगहोवैमेता
हिहैधनहीन तादिघ न्रुनाहिरि
खिकैवचन सातिमनिधारि माकीधि
भिटै नहीयम ज्ञाति सुचादैवा॥ नैस
चै

गयाच्छहाचलेति ३ ताहोकीचाल
ताचिस्त्रगीनीओभागनहीतिहि
मालाा३१ाा अथलिंगलक्षनाा लिंग
तरफदाहनी आहाा वहुतपुत्रहो
वेघरताहूबावीतरफलिंगहोआ
हि वहुतकंन्याहोवेघरतादि ३२ छो
टाबडा किसमसरिहोयााद लिडता
हि नरहोय पीठगोललिंगाउदिस्राहि
दुषाा भागीनमताता नादिा को

त्निघवघियाडुसमानातिन्हिनरवडाम्ह
मीयाजान्नु॥ सोनेरूपेमोतालालतांवेर
लिं गोंगनरिपभाल॥४१॥ दो॥ वणाकालानि
रमलाऋखालांवाहोयजाकोप्रयसा
लिंगहयफिरेदहोदिसहोइ॥४२॥अथ
म्हत्रकेलछना॥ तरफदाहतीघारीतिन्हि
नेवेठेजान्हि निसचेराजाहोइवहुरञी
खदीपवताइ॥४३॥धाराजाकीचलेनि
रमलसवडुनहोइ॥ वहुतहोरघतु
ताहिकेपुत्रहोरिपवहुतास ४४ जान्हि

लिं

सुभमोहसुमाहैसि

पुरषके मु जमे [illegible] मे वास
भली ही होय वहु तहोइ धनु ताहिके पु
त्र होहि वहु तासा। ४५ जाहि पुरुष के मु
जमे पीली धारा जाहि होइ नही धनु ताहि
घर स्तु खनक वहु पाइ ४६ जाहि पुरुष
केमुत्र मे होइ हो मका वासु। अइसो मूत्र
स्तु गंधि जिहि राजा जानौ ताहु। अथ पुहू के लो
लछन॥ [illegible] ॥ लोहू जासि पुरु
षका कमल फूल समान भाग वान जानो
ति सेत्र उरत षीति हि जानु॥ ४७॥ [illegible]

ते
दो॥ अलकेसरंग अिकिसमंहुसोवेजालो
हि भोगकरेबहु नारसोधनुलेतेसेता
ति॥४८ होहू पीलंतनकछू ताकोपापी
जानो॥ मनसिलअउरकावारद
ल गवरोचनअमिराम॥ घस
केअंजोनकीजीये॥ निषेतमो
सेवाम॥ ॥१॥ चितमस्नावचांकुष्टतगुरं
कुंकमंसमंपुद्याकिंदिवसेएक्षागरहसेी
वाचंदस्तर्षयो: स्त्रीणांसिरसेक्षित्वा पुरु
षस्यपादयो: दासोदासतांयंतियाव
वचंद्रदिवाकर:॥

ॐ अस्य श्री विद्या स्तोत्रस्य उत्कीलन लि
खत ॐ ब्रह्मा वैष्णव रुद्रत्य जया बीजं नता
पर: मायो कामं तथा क्रोधं तारवाल व
सेपुत ।।२।। क्षोभं मो हितयापश्चात उत्की
लयत्रिभिर्वदेत मयास्तोत्र जपेत्तस्माद
न्यथा दोष भाग भवेत अथ मंत्र: ॐ श्री:
क्रीं क्लीं ऋां पं फौं ।। इति उत्कीलन मंत्र: ॐ
श्रीवेन कीलं त विद्या उत्कीलन्य सच्चा
तेमाया तारयुतं मंत्रं जपेत अन्येतर
शांतं मंत्रंस्यात तथा चौते भवतानि
दायक: ।।

१ धिगोपायसद्धिमा___कामननंमत्रि
णाः ५ उदताङ्किन मात्रेण। कलौ शी
घ्रमभीष्टदा॥ इति उत्कीलनमं
त्रः॥ अथ त्र्यरशातत्र्यादिक्षेत्रे नप
ततसर्व उत्कीलनं भवेता इति मुमं॥
आदितवारके दिन जो कोई मुरदा
मरे उसके ऊपर सात वेर पयसा
फेकले॥ पयसा लेकार मोल
केल उबंध मानुषके ऊपर के

कणाउवऊहातेमुरदाआगेसोजाइ
तेवउठालेणाउठाकेफेरिपैकणाइसी
तरेसत्वारीफैकणा अथवाउ अथवा२
इसीतराकरकेउसमुरदेकेनालचलेजा
णाजाकेपपमा अपणेपासरखणा
परदक्षणादेणीजोलेदमसाणन्रमत्र
उठवावलविचरुटणा फेरघर
उठयावणा॥ फेररातकोजोणा ए
कालेगोटीलिजाणीतेउसमदोरखे
नकीलिजाणापिकामडकोरखणा

पालपान हार

नहीं एक कुंऊे मै दारू लि जाएगी नाले
उस पे तालि जाणा मू[illegible] साए को धा
र देणी चार दै के उस पयसे नाल ए
क कोयला पेडा साझावा रु रक ढलेगा
को ठ को जिसको कोयला घसके पले
कोला वे सो वस हार जे कर पी लेते
उनी हाइ तो पयसा घर केलावे ॥१॥

जो मसा ॥ के पा[illegible] कोलगा टी नी मो
वा[illegible]

ॐ नमो आदेस गुरू को ॥१॥ अथ जनातकाजत
न लिषते ॥१॥
जंत्र लिष के दि
षालणा जना
त का ज रू हो
इ ॥१॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | ० | | [illegible] | [illegible] |

३ ३ रु ज्ञं ज्ञउ सदे हे ठा लि छ एग ठुठ राका गदले एग ॥

ओ की लेश्वर कौ लें ठुकी लेम हे मक लोगा विठ की ले ता स्री या ह ला रति राका की ल्या ब्रो रो कार की लो म हो देव मोला नाथ केरा की ल्या छु

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ८ | ३ | ८ |
| ८ | ८ | ८ | ७ | ८ |
| ५ | ८ | ८ | ८ | ७ |
| ६ | ७ | ० | ७ | ८ |

ऐमहादेवकीजटा हृदेगुरूगोरषनाथ
कीमुछ फूटेगुरूकी०॥१॥ अमृतकोड
उगाण ॥ भुजि पा ॥ १५ ॥
६३ ॥ ७८ उ॥ षं धा ॥ ॥ ॐनमआदे
सगुरुको ॥ श्रीकीरछ्याप्रथमतपुरषकजी
कोरोमकीरछ्यारामजीकरेचामकीरछ्या
चतुरभुजजीकरे रूधरकीरछ्या रूघु
नाथकीकरे हाडकीरछ्या व
जीकरे नषसषकीरछ्यानिरंज

।नडीकरे पाउकी रछ्या परमेश्वर जीकरे
पिनीकी रछ्या पिनरिषव जीकरे गोड
पाकी रछ्या गोचर धन जीकरे
जंघकी रछ्या चितार जीकरे इंडीकी र
छ्या इंड जीकरे नाभकी रछ्या कवलनाभ
जीकरे कमरकी रछ्या केदव जीकरे कांध
की रछ्या बिरा[illegible] जीकरे कंठकी रछ्या
नीलकंठ जीकरे दंताकी रछ्या तेतो सकले
उ देवता जीकरे जबाकी रछ्या अपछुरा करे न
कांकी रछ्या पवन रिषि जीकरे आंखीकी रछ्या

ठाकर
सत नु मानजीका सीस कीर छा सी सडाल
श्री कासीका रे लोहका का कोठा सार का ताला
तीनपीड मयसी रष वा ला का ल जारा षे
काल की मा ई सीस राषे हनुमान वंत वीर
तामे की कोठडी वज्र की काया आठ मस
णी मय पिरा सोला वकुषाउ आगे रा षे
अगे ताल पी छे रा षे षेडपाल दाडग राषे
नारसिंह वाबे रा षे हनुमन्त वीर चार वी
र इ सा सी की र छा की करे पर करे

५ अथ॥ तुहीनी गायत्री नागा सूतस्तते
या सोती न भागा है॥ ठ मनसिल ऊपर
डंकोला के हेथ नेतर दी सेतं को॥१॥ दोला
ले डीया दै पीलडीया चं दे वर ले चार
जो मी खपरारि नके चैले मूष न मारा॥
सिका १ पारा ३। मनसिल २। हर
ता॥ २॥॥॥॥॥ सिंगरफ १ मनसिल १ हठ
ताल १ गधरका पाणी जिसत चांदी क
ली॥ १॥१॥

अथ वेद कभरोम ऊ:।। ॐ ह्रीं वटुकाय आप

दुधार णाय कुरु कुरु वटुकाय ही ।। इति ।।

अथ मंत्र हनुमान का ।। हाथ राघ धनी कपाल

राधे यो ग नीम सग राषै को / ति काप दो है राषै न

सिंह देवो हनु वं तु वीर तेरे मं ने की पूजा कि ।। वार म

र व वंध ते रे दे क लु वा वाध पं चा न दे रे वि धा वा

घटो ना वाध ता मं वाध को यो वांध के रा घो वांध

पहन वांध पहा पन वाध घर को वाध घार वा

तेर को वाध घाट को वाध वाट को वाध वनि

को वाध व इन को वाध ने ताघ भूत नाले । एक

ऽमार ... वी ने ती फट ... के

नहसिंहषेत्नतरात्नमेरीभक्तिगुरुकीशक्ति
फुरुकोमंत्रफुरस्वाहा॥ केसायका आसनटो
पीकोपीनकोरोह ऽ१ धीवऽ मोक्षानऽ ईस
वरकी हेऽमकर १०८

यन्त्रास्येतवषे

ऽऽऽऽ२२ऽऽ२२ऽ
११११११११११११११६
२६५५५५५५
५०३२...५५५५

| १३४ | १५१ | ७ | ७ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | १३८ | १३१ |
| १५८ | १५ | ८ | १३९ |
| ४ | ५ | १३६ | १३७ |

जंत्र जिस दे हथ बीका बस मकरडा होवै दुध की जगा लेरवे ॥१॥

ए ह जंत्र चार ताबा दे को [illegible] नलि खउ सकानो [illegible] चलिए को [illegible] होवे विच डलना वे तेल पाइ करवे सी होइ ॥

| ॥ | ॥६ | ०॥ | ८ | ४ | ॥ |
|---|---|---|---|---|---|
| ० | ६ | ४ | २ | ५ | १ |

| | | |
|---|---|---|
| | | |
| ४ २३ | ८ २८ | २ २२ |
| | | |

| | | |
|---|---|---|
| ४ २३ | ९ २८ | २ २२ |
| ३ २२ | ५ २४ | ७ २६ |
| ८ २७ | १ २० | ६ २५ |

जिसइ सजीने स
से मवस करणा दि वे सोइ सजंत्र को लि
ष घी के कुजे मै रषे ऊपर छीपावे उस
घीष सम को षवावे वस होइ आपन
माइ ॥१॥ ८७ जंत्रे

तंत्र गोल लिषणा

| | |
|---|---|
| १६ | ५ |
| ३७ | ६२० |
| ८ | १० |
| त | २ |
| ३ II | |

जिसइ सत्रीको गर्भ का पुरस का यार ष सम पर दे हरगया होवे इस जंत्र को लिषके चरषे ना लेवन नाकर उलटा फेर घरतुर नवा वे ।। १ ।।

| |
|---|
| SSSS22SS22 |
| १११११११११११११११६ |
| २६५५५५ |
| ५०३२६ SSSSS |

जंत्र रोटी उते लिष कर दोनो का नाम लिष कुते को षवावे दुदाइ जी होइ

| २ | ९ | ४ |
|---|---|---|
| ७ | ५ | ३ |
| ६ | १ | ८ |

जंत्र [illegible] री

जंत्र अष्ट मा
रकी ठीकरी
लेकर मसान को
[illegible] ले सा पलिप
ना उलिपद वे नास होइ ॥ जोइ सजी
व सकी याचा है तो पपर हो इ वे कर तब
व हे सा ॥

जंत्र भूत प्रेत के गल बंधे स्याही को वुद
रषद्द पाले तो हाजर होइ॥ १२०

| | | | |
|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ०।६ | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | ०।। | ८ | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | ८ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५२ | ५९ | २ | ९ |
| ६ | ३ | ५६ | ५५ |
| ५८ | ५३ | ८ | २ |
| ४ | ५ | ५४ | ५२ |

जंत्र राह चलण के न हो॥

रेवे रै
उदयद्दोरे
टंट्र टरे।

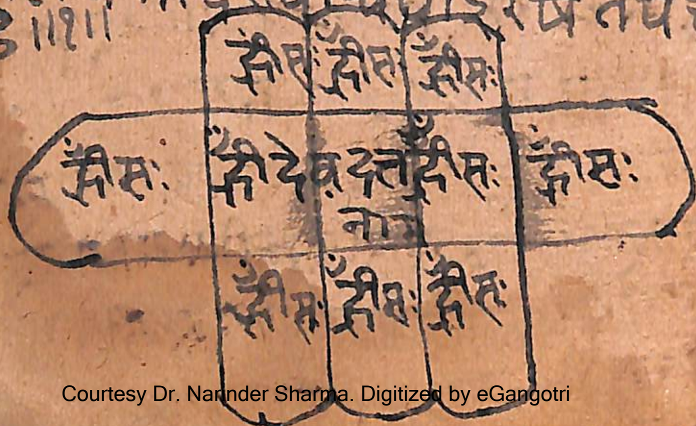
ॐ त्र ह्रां ठ त
ल त्र न लि
प उम का नाम
उ सु दी च उ का
ठ ठ ठ द वे उ र
तमरे॥ ॥

रेवे रै
उदयद्दोरे
टंद्र रे।

ॐ गल गल पडौं फुट स्वाहा ॥१॥

अरणी की लकडी लपती अंगुल पंज
मरकी तिस के ऊपर बारसत पडु धा
ऊके च रगडे पादवे ॥१॥२॥ इस गुडु
सता इस गुडु माता इस गुडु पाउपडंता
इस गुडु पंडुदे पाउ बारा वरस का मरे या
मसाणजगाउ आरा चीनी लगाने हरसं
गुडपड फलाई कोइ दुगुरू का ॥२॥
संघ

ॐ अज्ञा दितवार कै दिन केसर गोरोचन मध नाल पीस कर भोजपत्र ऊ तैका कंपष नाल लिषे बीच नाउ लिषे साध्य बीच घ डर षे तप च ३ ।।१।।



काकपषनील

ससाणदीराषनदिरानालपीसजे उलिष

वीचमाउलिष मदिगवीषराष गुनकेगो

लीकरचीचरषेमरे मरघरविच थेवे॥

देवदत्तनाम

चूरण
१० अम्रबंधे नकीगोली ॥ अकरकरा माशे १०
सुं० ८ केकोलमिरच १० जातीफल १०
लवंग १० केसर १० चंदन १० पिपला १०
अफीम र० मासे चूरण कर केडवी
विचपा रखे बाए केवखत मासे सोकी
साक्रित सोगोली कर दूध सो खाइ ॥ १
चार रतीअफीम ४ चार मासे हरमल
मी सरसक्रित सोगोली कारि दूध सो
खाइ ॥ ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को ॥१॥ ~~वावा स्याम~~ सबके अंध
आ ढाकुडकान माढाकुडकानगु
ठा पेलाकरे ध्यान हनुमंत की बंद गीव दसै जार
चारे लाटा उमरी या रोड वीर मसाण हुकम
तै उस्ताद का मार राग इति स्यान ॥१॥ ॐ नमो आदेस
सक्का मसान सार वज्र का कोठा ॥ सम पिंड
है मारावै ठा ई स्वर गोरजा दीयाताला
सनु मानजती रख्या रष वाला ता हण रा
नार सिंह वावै बडो वीर इधर पै जग
न नाथ पगर षेघर जीसी ताप न रका
कार का गेरणी नावैता रागी है तो वे पार

१ गुरु हो मं अद्द स से का वा ॥ गुरो वच न प
श के सर इनावित तो नू पा लीना लप
तरणा जेइस झी लगा वे ता पुरुष वस से र
पुरूष लगावे इस ती वस से इ मच्छो लागीन
॥ सतनाम अदेस गुरको ॥ गुरवीर मै
चेला तेरा वे ढ डु कौ कदियाकरमेरा गा त
के ग्रावे नव स्त क्रि का वे सो पी या वीर सो
षले व डा वे गुरू की घा क्रि ॥१॥ श्री गणे
शायनमः सतनाम अदेस गुरु को ॥
सत मा त लैके उना उते सतवार प
उके [illegible] सो ॥

ॐ हाकरे है नवंतको समुद्र सारके वसकरे
कौतिक प्र दम की आणा का हाव छु की छाया
रोटलं गोट उसरी पूजा ले ह चंडी या प्रवं
चंडी या माये ध्य रे अनंत है ति नवंत वलवं
त अपाणा वल हि मकू दे ति तो ह नवंत वलवं
वी रनाथ का वेला जे ह मेडोत सजा इ अके
ला जाइ अ केला फिर आवे सवे राम हिराव
ए की मुन्गा ३ बाडी अय सेरा जा मामचं
रे की कार ज कासारे अय सेकार ज करो समारे
स द साचाधिं

॥ विध अगे लिषी ॥ सबुसा सा आसा
अबन्हस्ता ॥ १ ॥ ६ हमे तार पठ के चुठेडे
दी गोर ३ तो से ३ सत चाकण ६ कहरो
डे नेघर आके पहे सत वार पीछे पि
रा गोर षे जिस के सो दरवजा र बोलन
हे के ॥ ॥ ॥ ॥ २ ॥

ॐ नमो गुरु को ॥ ॐ काची हांडी काचीवाली तिस पर डाडी बिदर की ताली नीचे मयसे किल किलावे अप रुत्र माम डाग हो तिस हांडी उ वले गुरु गोरष ना पली जे गुरु की ॥१॥ माहले के सत वार प ढ के हेठ हिठे ॥॥

१३ऊवेधकाङ्क पालिषते॥ फाडासिर
साती ऐक संभअंकोरस्त मे १ दिन
षरलकरे॥ एकदिनवतूरे घेरस
नाल॥ विकुंअइविनदेपसं मोलग
मदेरसनालपाछेपरलतेकठके
पारा रषे॥ ताबेकेपतोकरकेपोसरने
ठपारा चेठावेचठाकेवीचरती ४ डि
सतपावेतपटरकोकरलापोंआच

कुतर
॥ छीचपाकाली लोसीलेके आस
पहर की १ दिन नपार थोदिवावे ॥॥ ॥॥
॥ आदितवार के दिन ॥ क... लीकरष
धनि अरवार के दिन इरंडकानि ३ दा दे
आवे फेर आइतवार के दिन की पालक
डी याते ३ ले आवे फेर मसारावि च ३
सने ... ईदवले फेर ३ सनसंधु ...
... कैवार के अन इरंडकी पाल के डीया

१ नालफ्नकेफे रस्वा तडउदी रखे ।। प [illegible] उउ
रखे ।। ल्वा नफा वैतीपब ।ह्लोड़ाइ ।। प [illegible] म
ला ह्नोइ ।।। ।। सत्य ।।।। ओं नो मो आदे सगुर
को ।।। १ ।। काला कलूया अस लीरात ।। काली
कुतली मा [illegible] रात मय प ठ चो आधी रात
मय सो व प ठ व ठ घ ठ म अरो व प ठ
अमुकी बात सूती लोइ तो जात [illegible] गाउ ।
व प ठी लोइ तो जात उ ठ उ ।। आ दि अदिस
लो आके वडकें तरा ।। अमुकी को वेग
पकडी पछाडतीत ग [illegible] मारु ।।

वे गजान कुक आश्रम लाभ परोक्ष मुकी
को वेगन ल्यावे तो काल का माई की सव्यापा
पुध रे गुरु की ॥ १ ॥ ४८ का शरणा गाने

ॐ काला भयरो पीली जटा दिन रय
नो फिरे चाई चउ हटा सा ड का धूप न
यन को खाण मारे गड भयरो फला
व नै की गोड ...रकी ॥ ३ जउ पेर
दीया ठी करी याले के सता। ...
धूप न को सउणा केव खेत धूप
दे इस मंत्र एको तर सउ वार पढ़े सज पासे
बिछाउणा हेठ ठी करी आर खके सेव पृथ्वी
ऊपर जितने दिन तत मास दिखाल ला नहीं॥

अमरवेल अध सेर ॥ हलध अध सेर ॥ पीली
सरसों अध सेर ॥ तिसदा तेलु कढ के पचिया
कों लावे फर को ए तुलावे चतुपावे न चके
है ॥ त्रिधारा पीहर दे दुध विच पिपल
दी लोपपीसके पत्रे यानु लेपु करके अ
सीतरे आं चढे न चके भंकोत ॥

लूए एसेर सीसाति सकी भि करा कर बै
कुडेविचा पावे विच पयसाभर तां बार
ताके पावे ऊप्रनीवूपादारसपावे तर
करके नाले द सी पावे २१ दिनवार
षांव कर के रखे नाला फोपा व ए॥
तांदी रुपैया भर १ जिसत मासा ६ तां
बा १५ मासे लेकर गाले ऊपर जिसत फ
ट की पाव हरे मालि योगे देरस
विच बुझावे बार सत ७ गालकी डले

ओंवार वुगाके उतनी वार फट
कीया द्रिसादर व स्त रो फेर मंग
मंगदेदेर सविचगालके वु जा
कै फेर गधे दे रू ववि चचा दीवलो॥ १॥

सानहि वठ॥ जमत सिन्ता म
ह सीग॥ १

ا ب ت ث ج ح خ د ذ ر ز

س ش ص ض ط ظ ع غ ف ق

ک ل م ن و ہ ء ی ے

ا ب ت ث

۱۱۱۱ شرن ۱۹۲۷۵۰

तफवीमक नावफरकवनर

ओं तलेघ रती अपर प्रकासतेमारोनिपुता

डे मारे पासराजासिमरे राजकोमैसिमरोत्र

परोकाजको इ सेकार्थ समारादा दोमसाा

करणा॥१॥ ओं तफर्कवकमाावफर्कवैन॥

ओ दिमाबेवलीलु॥मसावाफिरोंदा।वाल

कैनवैना॥ हुमतेत्रावतोंवलवगहवो॥

लायोमिला॥कुलोमात्रवबाकदु॥नारिलि

ल॥ओरवेत्रतर्को॥हुलोहोवयसौना॥

फिलत्रेरदेपशारामवलावेला यद्र

वल॥ मफसदानारा

चडुरा हे की मिटी सा॰ ल॰ ए प ठ १ वार
चु हेमे गेरे जल दे गे पा ठ कपडे ॥१॥ दारुया॥
गुगल उल॰ पांक फुनि स्यान्व स्व मै मेलि
धू णी दे जे प्रात उ ठ ज्वर चा उ पा ई रे लि ॥१॥
को सा सुंठी पी परे ए सम मीस ऊ आनि गो
ली की जे स स्त त स्यो हो इ पंच की हानि ॥१॥
५ ॐ अ षलु पय देवे स र की विधी ॥ अव रवे
ल अधस्तेर ॥ मरूया अधस्तेर ॥ नो
को ज दा जु दो कूटे कुट कर चार यको

या अमर वे रकीया बनावे ॥ अंगुल चारकी
या ॥ चारे मरूपेकीया वणा वे ॥ पी
म रूयेकी टिकी पहिले है अरवे फेर दूसेर
ो वरखेल कीरषे ती मरे मरूयेकीरषे
3 पे अंवरवेलकीरषे उसके ऊपरप
यसारषे पयसेके ऊपरफेर मरूये की
रषे 3 सके ऊपरफेर अंबरवेलकीरषे
सके ऊपर मरूये कीरषे 3 सके ऊपर
फेर अंबरवेलकीरषे इ सीतरे

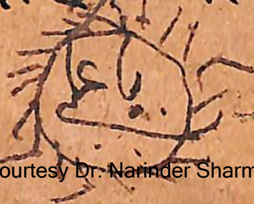
टिकीयार षके संपर टकेरे कपडेका
मिटीका फेर गोहे सेर ५/ लेके उल
थिसफूके ॥१॥१। दारू षांसी धांसी
की ॥ इरंड के पत पय सेर ४ भर ॥ ल्हूए
पय सेपेंजा भर ॥॥ दुसपो कानूरला
यके के कुटा कुटके पि मीव णा वे के
र दुस ठीयाले के सेठ उतदे के फूके
रा षकर के पीस के फूके ॥१॥ ।

मंचमोहनींहवंता हा॥एवंताहा॥एवंताव
लवंताजानगीजाता ताखेलुकरता॥जे
केआवेमारमारकरंता॥सोभीआइ
केपगीपवंता॥राजामोहपरजामो
हपटेलुतेपरधानुमोह॥छतीसको
मकीवेटीमोहमोहमोहलगाऊपा
ऊजोकुछुमागासो [illegible] देवेआइ
हुकीपाऊहमारीभक्तिफुरहामेत्र
[illegible]॥२॥

प्रश्न ॥ ॐ ॥



१ हिक्का) २ बुरे) ३ मित्र नत)
४ बुरे) ५ हिक्के) ६ मित्र नत)
७ हिक्के) ८ भले) इति प्रश्न





गोलीआनेत्रा दीया॥ अग्नी तिला दा फु
फूले हरे ८०॥ सुंठि मघ पिपला द ६० परीया॥
पंजा हरचे वेली दी [illegible] याकलीया हरीया ५० सो
ला मिरचा काली या ९६॥ इनाचा रेची जानू
पहिला तूटेना लकुटला णीया फे [illegible] मंग
रे दे पाणी नाल रगडणी पाप हरस्प्रेठ ८
माडे दो वे कासी देघा ली [illegible] कटोरा॥ जाम ते
हीनु हो वे ता गो ली या करले णी चाण प्रव
ण॥ जि सनू फोला हो वे ३ सनू सहत नाल
पावे जि सनू मेप्ती या विंदु हो वे तिसन गो
दमू तनाल पावे॥ जि सनू षोरा वा ३
हो वे ३ सनू वे हे पाणी नाल पावे॥ घटे

टेमिठे दी रषक राणी घिउ अनुतु प्राणा क
णकदी होटी ज्ञुन्नतीदे राणी ॥१॥ णाडाउ
नमोस्राचे सगुरू को ॥ फेडाफिमणी
कच्छ रा ली लूतपक लूदी ही सा हूसर
फकी पजे भक्ता न्हते गुरू की पाछि
रू मारी त्रञ्जि फु०० ॥१॥ इड्डिका पूतुले
लकाजाया रुड की पीड काले जैतू पा ॥ स्रा
वी लीकाट की याद्दे रा ॥ जो दी का
पभेर षफेरी ॥ गुरू की पा० ॥१॥

ॐ मांग की जड टं २ जाइफल टं २ पी
सकुली के दूध से ती तालू ऊपर मस
ले सो वती वेर रोगी कानि डाओ वा॥ १॥
मस्ताकी टं १ अकरकरा टं १ अजमोद टं
१ जाय फल टं १ अफीम टं १ विजया
बी ज टं १० औषध सम पीस करि
स्टके स हित रोतीर लाय गोली रत्ती १०
प्रमाण बंधणी गोली षाइ घडी ३ संध मन
सो ५ ॥ ॥ ॥

साठीके

१ आवलेकी छाल मंजीठ चावलकेधोवण

सेती पीसपाणीसायप्यावणा स्त्रीकार

तौपवाह जाइ॥१॥कायफलदीसफल

सूठिमाडंगीजवासावांसका कडसिं

मा.ञा गीएतेऔषधसमपीसकीउडफकी

ऊपरससीषईरोगजाइ॥१॥जवषा

रपीपलमिरचकलीचनासोरासजी

गुडपुराणएतेऔषधसमनाचापीगुड

सेतीरलागोलीकागोवेरप्रमा॥एकगो

लीनित्यषाइ।तोषईरोगजाइ॥१॥ नी
चरस्टरगोषरूमिलोइफुकरम्हल
एउँबधरसमपीसहस्तमेचटावे॥
स्टलरोमभ्रतीसारजाइ॥१॥ दारू
पडवालाकी॥गेरूमिरचल्हएगुड
एतीनोसममायजलसूलेपुपलकीपै
छायापडवालजाय॥कुठमिर्मंझरूका
यफलअंरडकीजडहवालतपत
नीरसोलिपईतिरोरयतकीगुटाल॥१॥

फलतिलाकेगोम घृतमाधुआमेपा
ड॥केस हुलेपुजुकीज पेब हुतवधे
धिका ड॥१॥ प्याजस्वेतरती३ वच
पुरा मानीटं३ सीधाटं३ पिसमेवे
नालकथ फाक मारेनामतेगीजाड॥१
अपअजन॥मोधाट१ वसेडेकीगिरीटं
१ १आवलेटंमिर्चि टं१ए तेओषधसम
पीहइहिके दूधसतीगालीकरणीवो
सीपाणीसेतीअषीप वणा॥१ सीधा१
षंपरीया॥१ पीपलिरा तेलफुला१ अ

प वा चं वे ली के फूल १ कसौं दी की फू
ल १ हा र्व सम पी स पा णी मे ती अ जन क
र णा॥ अं धा फो ला जा इ॥१॥ पी पल स्ती
धा पी स पा णी से ती ना स द्दे णी अ्राम
वा त जा इ॥१॥ ओं नमो आदे स गुर
को॥ प ह रा मे रा हे त का म ले म ना ए तं
ता॥ मत्र पर व त तो ड के अ एव वृ हन ली
वं त॥ दा ह णे ड ल यो ग नी वा वे वा व
ना न वी र॥ पी कै मा रिं द आ मे हन पं

तवीर मस्तकासंधरका विंदाज्वाला
कीह्या ही॥आगे फौगुरूगो रषकी रे
दुहाई॥१॥अथ भग संकोचन॥का
द कसेला पटका ग्री मांइ लादक
पूर वेर मड़ीके कनेर की॥छिलु
मा जू चूरनवराव रकरिके भग
मा ढि पायके भोगु करे॥दूसरी॥
माई धावे फटकडी मा जू लोद
वेर मड़ी है॥मभवरा व रिके रन

१०३ ॥ उपाउ ॥ वडी कडुआरी की जड घा
...आदित वार निरणो लीजे छाया मे
...को वे पीस चूरन करे गाय के दूध से तीप्याव
...दिन ३ पटा वा पला मने कोरणा संजोस ता
नभवती ॥ १ ॥ गर्भ स्त्राव णे को उपाउ ॥ गाज
र बीज टं ९ कडवा तेल टंक २ ॥ गाजर की वी
ज पीस चूरण करे कडवा तेल से तीप्याव
णा दिन ३ ॥ १ ॥ काली मनोल एक की डड सा
टी के चावला से ती प्यावणा दिन ३ ताई त
बकारंम जाइ ॥ १ ॥ विसषपरा टं ३ गौ जा
के मूत्र से ती दिन ३ प्यावणा कार गजाइ ॥ १ ॥

सा।।८ २षा डट २ दोइ हे तीषका व
इद्दिव ७ ताई सर्व कारंग जाइ ॥१॥ अथ पार
तेकी उपाउ॥ हेत सामारं २ जवषार टं २
कापूर चीनी या टं २ पीस सरसत से हीरोली
कार एीवेर प्रमाण भ्रमात तिकालइद्दि
३० न १ कूलु आवो॥१॥ [illegible] ३ पा उ॥
[illegible] होय॥ अथ तेल॥ तेल पीगन्हे
रपति स मछोए ओषध मेलए धतूर तेके
मेल बीज सेर १ [illegible] टा वइ जव आधा र है तव
[illegible] समध्य वचा टं २० पीस रलावे तवम
र्दनकरे सन्नपा [illegible] रोहरमाला होय॥

दूसरी विध षोरा वाउ की ॥१॥ सहेकी मी
गणास कीया सोया ले पणीया ले के उ नादा
रे ता झाड णा जा लकी पाहो हनता एक ठी आ
करि के भांडे बिचि पाइ के डाल णीया सु आ
ति हो वन ता ता कपड कुणा करणी सुआ ल
गो के म खण विचि पाइ के पा ली उथले उ ते
पा वणीया उ त दु कासी दे कटोरे नालि रगड
णी या दिन दुइ सा वी पा वणी आ चंगा होवे ॥
दास ती पद ॥ गा लो इ स वी स इ ता मिलाइ
तो पद व स पूरा

तुनीवसावरधतूरेकौररसनालिगोली
करेकुवेसकोवेपुररकेमूत्रनालपिस
केइडीलेपुकरे॥१॥बोरेवउकादारूसि
रसानीफटकडी१सिरसानीसोरा१कोसा
ठीकफलेणाठीकरविचिफटकणीपकावणी
पाणीनवीपावणा छकेकोसीभिकर
चडावणीजदउपरतेकरडीहोवेतदिपीस
णीकेरिमलकेबिन्नुकुरलीकीफुकॉउतेपा
वणीअधचणाहिथ्यालीउतेपावणाघास
णाघसकेअखीपाउउणाखोराबोउडाइणा

करे नगमासिदेइ ॥२॥ अपाकुपसको
चने असगंधा मरूआगजापि
पलीवचचकनेरुकीछितु। कुट
केसरातमवरावरपाणीनालिपी
तकेलेपुकरे ॥१॥ चेवलेकादरू ॥
गोकाघृतस्वेतजीराजलावेलो
ते देपाचमासिघसेलगावे ॥१॥

दारू धरदी कवडी दी फा रे दी।
मिरच दषणी पयसाभर १ संठ पांच
पयसे भर ५ चार पयसे भर षडी या
सुहागा ४ मघ पिपली पयसा भ
र १॥ २० विस पयसे भर षंड॥ कूट
चूरण करे प्रभात उठ षाइ संध्या
को षाइ षाया मिठान षाइ॥१॥
दारू कुष्ट की काली हलदी २ रस्से
पी लौट १० पाणी सो पे

यारू नारवे की तेली या सरसा गा फुरा ॥ गग डौली षाइ ॥१॥ ज्वरतर ॥१॥१॥१॥

| ३६ | ४४ | ८ | ७ |
|---|---|---|---|
| ६ | २ | ४१ | ३९ |
| ४३ | ३७ | ८ | २ |
| ४ | ५ | ३८ | ४२ |

दारू अनवाइकी लौंग मपर्चीछोटीला इ चीआठ आठमा मेलेरसकपूरमा

से १४ समनपीसकपुडीचउदवांव पे १४ एक मांरू षाइ एक सवेर काइ पक्कि चौडी अलूणी से टी रूषी ॥१॥ पाकी समन

५

जंत्र राजा प्रजा मोहनी अष्टगंध सो भोज पत्र उपरि लिषी जे आदित्यवार न्हा॥ मोहनी॥

जाकेपुत्रसे ताका साप है लाल
डोके घी होयताकासापहैपी ॥१॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं चामुंडे चा फुट
स्वाहा ॥ पयसामरज्ज्र वीर लेटो
मो मै कमरसमा नपाणी मेआय
त वार नै एकोतर वार पठेस
छ डोर की माला ऊपर सिर घते ॥१॥
वस हो ॥१॥

ॐ आऊ का व त्रिले के दोनो काना मलि
षे पामषान कोइ ले साथे ॐ फट्
मंत्र वीच लिषे चौमार्गी विच स्था
पये तब दुषण होइ ॥१॥ ॐ व
नमे ब्याई अंजनी जिन जाया स
न नं तव घ पनेला का पलाती
मसनो करो मंतर गुरकी शक्ति मेरी ॥२॥
अथ डाव को षम सा ॥ मन्त्र ॥ का
अष्टगंध से लिषणा गल बाधणा ॥

६

ह

वाम कम रसो वांधणाजातगर्भ
ध मे हनूमानकी पूजकरणी ॥१॥

ॐ फांडाफिरलेली कछु पालीलूतेपका

लेहतेदडीसादपरका ह्रींपंजेमस्नाम्हेता ॥ गु

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | ह्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | |
| क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं |
| ह्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं |
| क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं |
| | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | क्रीं क्रीं क्रीं | |

अथ जंत्र ताप का लिष के गल बांधे॥

सीच

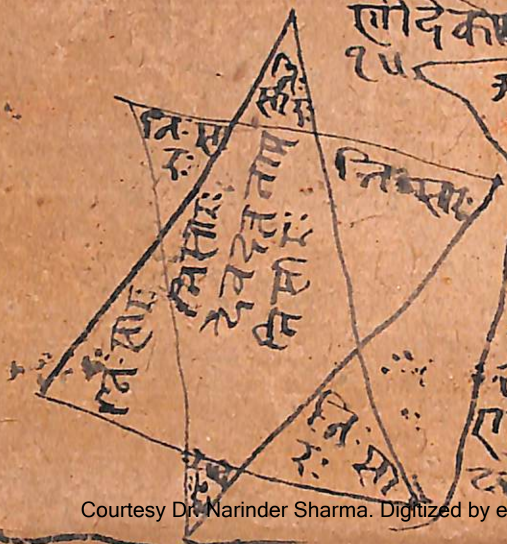
१ कु घोल पिल

वे

देवद
त॥

२४

॥ अथ यंत्र सर्वरोगका मृतादिकका धदे



ती दे कोधे बांधे ॥

१५ अथ चर तंत्र ॥ व चोकु ट तनु राके सर ॥ गोद च ने ॥ प्र त म वीजा ॥ एतयको दके सिर डा

देतजंनवा ति प्रकार जेहा ।। दंदनु
संधूरसो लिषेजे तोस्त्रीसो प्रीत हुय
गोरोचन कवतूरीसो लिषे जे तो प्राणधा
रना लागा अवाआदि वंदि आ पत्री रक्तो
सो लिषे जेत ॐ स्त्री पुरष वस कार
ण होय संधा तेल सो लिषेत ॐ धंना
कुटेअष्टगंधसो लिषे जे सर्व मन
वसंकरण होय ॥ कुंकम गोरोचनषड

२ ३१

कसतूरी अष्ट गंध सो लिषित॥ भोज
पत्रं॥ अवज्ञि लिषणा सो लिषे र व कापूं॥
ॐ ह्रीं ॐ श्रीं ॐ क्लीं स्वाहा॥

२५

| ९ | १६ | ५ | ४ |
|---|---|---|---|
| ७ | २ | ११ | १४ |
| १२ | १३ | ८ | १ |
| ६ | ३ | १० | १५ |

नऊ कोठ सपंजिविं
चि सषसतिदुपरुद्धम
तचउदसरवतसविशि
अठे वसधं उरकुषटमि
तिन दसदिसापर स्ति

२ ३१

२५

चींजंत्रं रंदं [illegible]हा॥ चोर नत भिनीविरी
दोडर सं उग्र हृ म्रू तपिसाच विनासकरं॥
विरिव म अररो मविपति हरं न उन्माघस
उच्चितिजं त्रंरदं॥१॥ मंत्र देवी का ॐ न
मो भगवती कुष्मांडनी सर्व कार्य प्रस
दनी पद्मे तवर वरदे हवरदे हंसील
सीलमातंगनी सत्य बृहि ब्राहि स्वाहा॥१॥
मंत्र मृत का॥ ॐ नमः मृ के केष्टी रते मृत प्रे

७०। ६ ।।।।११११

तत्पूानं कु रुकुरु स्वाहा।। इस पली तेलि
षलि ष जला बेइस मंत्र पढे पली ता आगे

२१ ७०। ६ ।।।।१११

विषदुषदेणकी।। [illegible] रके दिन कूप तेर एवबा
क हाथ नाल जल काढे मसाण जल दे
पा पास जाय वलदा की पला णी नाल कुका
३४ केवेयआवेजिसको दुषदेणा होयउसका २१
ले

नामलिषेनालेमूर्त लिखेआगवीचपा
वेगीकरीकोदीलयतीजिसऊपरकली
यानपयीया[illegible]दोयीयानेनवे॥१॥
फुं मोहनमंत्र॥ॐ[illegible]श्रींक्रींचामुंडेचा
फुरस्वाहा॥१॥ऊवीलेरववारकेदिनक
मरसमानजलवीचषड़ोवेमालानालेएकड़
कोरवारपटे॥१॥नीलापोयाटपचूनाटकेकी
को१गोकीमषतीपथरऊपरघसेपा

डोजाय॥१॥ जेत्रयन्त्र कै॥॥ दासाता पदा॥ कडूकेपा तढाइगुडत्रेदेय॥१॥ जेत्रविसका॥१॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३६ | ४४ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ४१ | ३५ |
| ४३ | ३७ | ८ | १ |
| ७ | ५ | ३८ | ४२ |

| | | |
|---|---|---|
| १ | २ | ८ |
| ४ | ७ | ५ |
| ६ | ११ | ३ |



१८

जंत्र बांझ का॥१॥ जंत्र नारवे का॥२

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५१ | ६४ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ६१ | ६० |
| ६३ | ५८ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ५९ | ६२ |



अथ जंत्र मिरगी का आगे लिखया॥

मृगी का १०३

| ४४ | ५० | २ | ७ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | ४७ | ४७ |
| ४९ | ४५ | ८ | ९ |
| ४ | ५ | ४६ | ४८ |

२९

नारवेकीतो षद॥
तैलीयस्तूहा गा
पुराणागडगोली
वांधवाय॥१॥१॥
जंत्रडाकणका॥१॥

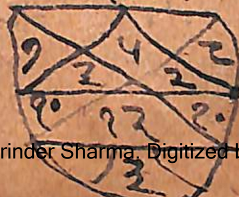
कासीकीदारुगाझ्रांका
काहूधसाभरतूसागि
पतीमेवराबेदिनरागो
लीकरवायषोसीजाय

| ११ | ८४ | २ | ९ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | ८१ | ८० |
| ८३ | ७८ | ८ | ७ |
| | ५ | [illegible] | |

२८ २८ २९

अंजन॥ पगसाम रजिसतकीसप ढाई पयसेम
रलोद॥ पीपल टंक१ म्यर चट कर१ लौं
ग टंक १ बड़ीलायचीट्क॥ समुंद्रझाग
टंक १ गुलाबके पाणी मे रगड़ीजा
लाजाय फोताजा अंजन सर्व गुण
करे॥१॥४॥ जंत्र परीका॥१॥





जेंत्रन जारदो ॥१॥ जंत्र चोरको ॥ जंत्र

| | | |
|---|---|---|
| १ | १२ | ८ |
| - | ७ | ४ |
| ५ | २ | [illegible] |

तिषके कुकडके गलबांधे चारके एक कूणैतावेकोपा वेहैठेसो आपुट रावे

त निय ऊपर भरमसाय उना पासा हो पात वावे कुकडको ते ॥१॥




२०

२०

चौरदा

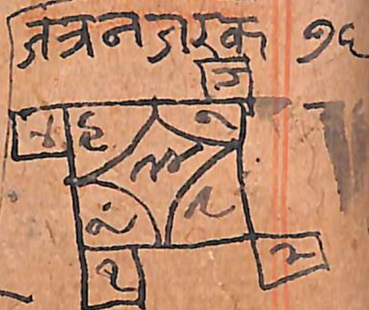
दारू आगके जलेन ॥ दाल दे पयसान
२॥२ सुपारी जलायके १ सतमा सेगेरू
मी ठे तेल मेलावु ॥ १॥ १ जंत्र तापको ॥

तापको

२१

| ३० | ३१ | २ | १ |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | ३४ | ३३ |
| ३६ | ३१ | ८ | ९ |
| ४ | ५ | ३२ | ३५ |

जंत्र नजार का १८



मं [illegible] वे [illegible] ॥ ॐ [illegible]

[illegible] ॥ दारू गंजे की ॥ मावले सार

सिरसाहीर २ ह२३ सि०२ क३ जीपा

ली सिरसाहीर २ जलाय कोलावैतो

के घी पे ॥१॥ दारू दाद की फी मनी

कृत्लावे ॥१॥ नीवृ मृत्ली का वीजला

वैदा दजाप ॥१॥ दारू कुष्ट की ॥ काले

तिल ॥ मलावे पुरासानी नवाया ॥

पीसे षाये॥ मंत्र साया कानजरकू॥

१० 

| ५६ | ५३ | २ | ७ | ओं नमे पष्पा वैरा |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| ८ | ३ | ५० | ५५ | गुरु को॥ दुषे मैं |
| ५२ | ५७ | ८ | १ | लावे ला मीन |
| ५ | ७ | ५६ | ५१ | दारू ज्ञैलोकी॥ |

२२

लौंग १४ मिरच २१ पूर माहे ढाई मका
र पान रह मे मीं करे झाड वैरसी॥१॥
दोस्तु मिरगी की॥ कोन मंत्र राकूटके

वेधुंदनीप मातपथ्यम्मलूणादेजं
चे मिरगी पीडानास॥ ११॥ गोलीम्लकी
हिंगमासेप सुंठदो पयसे २ कचूर
पयसे तीन ३ संचरलून पयसे २
जमहरणपयसे २ सुहागापयसे २
लीमसुहागा कचूरमून लेणासुसाम
णेके रसमेबंठी करे गोली षाय॥ १४॥
दारु पडवालाकी॥ मिरचगेरुलूण
गुड पतीनोसममायजलमकलेपजु

पलकीपीजाघापदुबालजायं॥१॥
दारूउलाकी॥१॥कुठमिर्चत्रपूर
कापफलम्भूरंडकीजडुबालत
पतनीरस्लेपाचेसिरोरवकी

२३

कौटाल॥१॥लेपगांधाहीसीका॥
सीघ्रतसोधीधापीसकेनासलेप्रभा
तविधयोगभूषणत्रोकहेआंधा
सीसीनास॥१॥दारूकुतेकीपाउकी॥

सपीकीकुंजनीकीकरके[illegible]रोटीमेपका
वेरोटीषवा[illegible] वेकुतेकोकुताहछुटे
प॥१॥ सारफोडेकी॥ रेउंदा। मयनफ
ला।गुगलाहजी।गुीकेरेपरघसलावे
हछुटेप॥ [illegible] मंत्र जाढकाझाड़ा॥॥
[illegible] डेंकालाकीडाकजेलावहु
निछुनदीपादेविचषा[illegible] कंडउगलि
लाताकीडामोयाजाढहरियाली[illegible]
[illegible]कीपा[illegible] रीम[illegible]पुरमे[illegible]॥॥

मंत्रअग्गापीदुपदीकीउंनमोआ
देगुरकेकारीकवारीकारक
टीओऊँआपनवांधडीहन
वतषडाकीलकीलाऊँआऊँआवि
पछमकहूजापहिमवंतकारवी
रवीछूलकीमसतकीरषाकारी
२४
गुरकी॥०तिमकीटहातोसारं१

झाड़ेंं॥ ॐ पनतेआई अंजनीगी
वंजे फल षाइ हाक मारे सन
वंत को आंघा सो सीजाइ गुर की
शक्ति स्मारी मेंकि फुरसो०॥१॥
पडीकुरीते झाड़े दरदजाइ॥१॥

सार्वकिन भियाध घौत्वं तर्व स सोंजी ह्रीं ह्री झांउं

मो जंत्र कुंडली का अष्टांग घ सो लिषे कौ जंत्र पत्र मे षेत वाले का नाम लिषे ते विच दवो

२५

२०१६

| | ८५ | ५२ | ५ | ४ |
|---|---|---|---|---|
| | १ | ८ | ८१ | ६५ |
| | ५३ | ८४ | ३ | ३६ |
| | ७ | २ | ६७ | ८० |

जंत्र ओघा सीरी को लिष सिर की उसी तरफ का धो मढी की सीर पी बांटे नला सेइ

| जंत्र सत्य |
|---|
| ६२२ ६ |

८३

नीलनीलु मा सा नील बी स्तु प ठे को
प कील: कील म्रा वे व जी द सा बं त बी
र हो कस त स्न कील श्र प्ट रा पे भ्र ट का इ
रा पे गु रू का पु दे बां ध रा पे म री भे ठ ॥ १॥
आदित्यवार के दिन लीली ..त का ग्र
घु काली लेप ट का एक म त वा सा प्य का
ले णो सा त तार का ता गा बा ट णी जो इ स्त्री
प्रधान सो हो इ जो हा ष बा प उ र घे र उ स नी
सो नी बराबर दो ने मि रे क रे तिन गांठ में पा ३
ठ के ३ स ह ला गा दे णी गो बर की ..णी दो ..कर
उ स प उर की माटी के र बा स णा में घ रे रा ष णा मं
ध के का प बी थी जा इ उ व ग ठ पा ले इ मा टी र

लिंग का उपाव धनेका॥ वच। कुट। गजपिपली। असगंध। खरटी। सभ बराबर कुट के मंहिषी माखण ना लेले पु करे मोटा होय॥
२६ असगंधा पारा। गजपिपली। हलधी। मिसरी बराबर कर के ले पु करे॥ मखी का दुध थोहर का दुध। संभालु की जड़। लेपु करे॥ नामऊपरा॥
वगो कुष्ट का उपाउ॥ रतका। जि

इदंनवाथ विच पिछ्के लिषी पतरे ऊपर॥

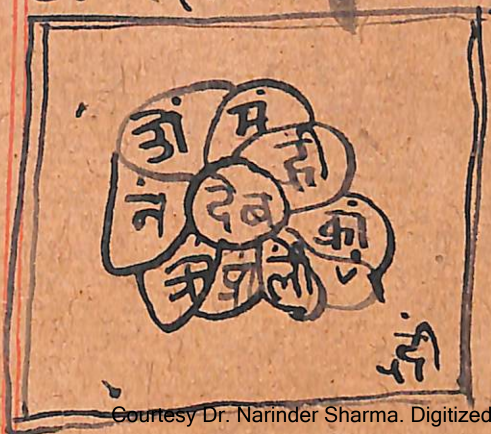
| | | | |
|---|---|---|---|
| ८<br>१६९२३ | ११<br>१६९२६ | १४<br>१६९२९ | १<br>१६९१६ |
| १३<br>१६९२८ | २<br>१६९१७ | ७<br>१६९२२ | १२<br>१६९२७ |
| ३<br>१६९१८ | १६<br>१६९३१ | ९<br>१६९२४ | ६<br>१६९२१ |
| १०<br>१६९२५ | ५<br>१६९२० | ४<br>१६९१९ | १५<br>१६९३० |

॥ जंत्र तेईचे केतापका ॥ २१ ॥




२४

जंत्र चउथ्यो केतापका पिपलके पता
ऊपर लिषके बांधे ॥१॥ तापजाय ॥



जंत्र परीका भूतका प्रेका गलबांधे ॥१॥

| १५०१ | १५०० | १५०७ | १०९० |
|---|---|---|---|
| १५०८ | १०९५ | १५०[illegible] | १५०५ |
| १९८ | १५१० | १५[illegible] | १५०० |
| १५०६ | १०९९ | १०९१ | १५०९० |

२८

गका पु॥

भगकोजड म्रककोजड किनेरकोजड

दारू पिसा[illegible] ववंदकी ॥ सोराटं २ गोकी छा
छ सेती [illegible] प्यावे तव मूत्र छुटे ॥१॥१॥ १ ॥॥
दारू जले दी मनुष्य दी षोपरी पिसटं १ क
थटं १ कवडी जला टं १ कों [illegible] वकी चूनी
जला य सममपी स कपड छाण कारा ती ॥
तव चा दी ३ परिला वाती जल्या मलदो
२॥१॥ पलास बीज त्रिफला सम पीस लावे
ण दिन ७ [illegible] त कुष्ट जाइ ॥१॥ लाइची या दो
नौ नेत्र वाला पीपल केपा तनी व की पछाल
व स लो चन ए औषध सम पिस मिश्री दू
णी मिला इ पा णी दिन २ [illegible] हकाल [illegible] ॥१॥

सतावर साठी चावल पीपलि एडो षधस
त पीस मिस्री रला इ छुली केद्ध घीसे तीपी
वै दिन्नर हीं केमसे इ धव द्रुत होइ॥१॥ चिपाली
कीकर [illegible] छाल पीस गोली करे गोली
षा इ १ षंम्हीजा इ॥ कथ्य धन तरवी जमिर
चम्मा वले चिता ए औषध सम पीसम्मादेके
रस सेती पुट ७ देणी गोली करणी वेर प्रमा
ण ए ते गुण करे कफ जाइ कंठ मेल होइ
भूष होइ छेली कडलण जाइने नडो तुहोइ॥१॥
अथ कंडन॥ स्त्री धाल्य सावि जयरी कामी ज
आवले लाइ चीए ऊषध सम पीसवा मी
त्रि व रो णीसे ती गोली व ध पीदेणा ७ घा चो
ग च्या॥

३३ अथ पैडूना बहेडे के बीज पलास के बीज खिर
णी के बीज करंजुवा के बीज ए औषध स
मपी हाइ स्त्री के दुध सेती अंजन पीसकर
णा फोला जाइ दिन ७।।१।। होराट १ मूसली
ट ५ पचीस गो की के छु सेती प्यावणा दिन ३
मूत्र च पीडा जाइ सर्व पर मेवु जाइ।।१।।१।।
नवसादर टं २ ए लू वाट ५ जीरा ट २ कुवा
र केर स म सेती पिस गोली बेर प्रवाण वरमु
ड सेती पले टे निकले दिन ९ ताई कलेजा
तिली फिली भली होइ।।१।। आसेगं घजी
रा सम पीस पाणी सेती लेप करणा वेर इति
[illegible]



हठताल मासे २
गुगल मासे १

पारे की विधम
रण अकका दु
ध केडि प्रारी की
जैडि अ कर क
रान मकार स हठताल २ गु
गले मासे १० नीला थोथा
तिर सालीग ऊरो चन मा
से ( पा रा सिरस की ॥



आदितवार की रात के आधी को सरसों की प्र
ल कूट के पुतला बनावे उस के मथे सं धूर का
टिका करणा धूप गुगल का करणा सवा सेर का
रोट करणा संधूर गुगल लौंग नेदी कु कडु मार
छुडणा सेर दूध दे एक कलेजा रखणा उस के
स तडुक रेकर रोकर के भूनके पास रखणो
[illegible] को रदेणी मंत्र पढ़ के मत्रा थि छै है
कारते पुतला का रखणा स मछी सह
अंदर रखणी बल धा की पहली कीकमा
ने बणाव णी मवली को दणी ने ला
[illegible]

सिर के तकुले कतीर के के पास रख णा
इक बोटी लेके उस उपर म तर पढ़के १ वार
उसके सिर उतो दी सिर ना [illegible] रूज [illegible]
[illegible] पावणा सन पावणा सतारू के
या उते सत वारी पढ़ना फेर मो डी मार के ती
इके मान ले के ५ कडिणा उस पर तेल के डा फल
ने उत कर ऐ ता त ३ उसके तीर मार णा ।। ते दे
वी उठ कडेणा ३ उसके नेने तो गले के सू
का मार णा उधर [illegible] पढ़ छ इ सा ।। ।। रो ठ दूर
जा के पावणा ।।।

अथ नूष निवारण मंत्र ॥ ॐ ह्रां सपारी
र अमृतं माकर्षय स्वाहा ॥१॥ ॐ देव
र के तीजा धान्य के चाउल कुं दु रू के
बीज सरसव ए ते मेलि चूर्ण मंत्र पढ
घी ईसो भक्षयेत पंद्र दश पादि नतेल
के नूषन लागे ॥१॥१॥

३४

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | [illegible] | २ | १ |
| ६ | ३ | ६ | ५ |
| ६ | ३ | ८ | ४ |
| ४ | ५ | ७ | १ |

ॐ ऋंजननहमारीगोबोवतेमस्तकभैरवजाता
मरीसमामैजाइषलोईयेवैलनतके र
ता॥१॥ दालहलदसिंगरफरतका
कीजउसममात्रापीसकेसेमकेपत्रान्हे
लैपुकरणापीकेगलणवालीवानीव
धे॥१॥ ॐ वालीकौभैरो [illegible] रव्या
[illegible] के [illegible] ला॥ [illegible] रत्वा॥१॥
मलीतहातेल॥ [illegible] ॥ हाजिका॥ [illegible]
[illegible]

ॐ नमो आदेस गुरु को ॥ सात समुद्र सुलान
णा मुरु मंदा बीर मंगावणा तीन घडी तीन
सोय त लोक ठाको छूवत रासे जलावणा । गुरुव
ते फुरो ॥ ॐ आदितवार के दिन तेल मे जप
करणा ५० दिन करे ॥ जल मा हकमुर
स कान मा हषडा सरके ॥ जब जल हो
ला ट निकले तब जाने मे जुमिध भया ॥
पति रसा व के हंड के उपे ॥ ही के री ले के
सते वारि सघ ठ के जिम रउ पर कुटडो जेसे ॥

लपियावणी ॥१॥ दारू पित्त पीडा की गलेरू
जे की॥ विहखपराटं १ रवि रचंटं २ जीया
पोता की गिरी टं २ सो समास लेपु करे ॥ फा लगल
लेकी दारू संषटं १ षपरीया टं १ नीलाथ्या सा
पाटं १ फर कडी टं १ पीस अंजन करे फाला लेपु
जाह ॥ दारू त्रि की घात की रुधर की ॥ रे ॥
दाल सलद टं ५ रक्तचंदन टं ५ काले की ज
डटं ५ मो पा टं ५ चिता टं ५ विल की गिरी
टं ५ कय नली के पात टं ५ नेत्रा वाला टं ५ ए
औषध सम अंश विसेषक काठा कर देता ॥१॥
मोर पंष की राख सत टं ५ सेती पाणी
मा [illegible] घोल [illegible] पावे ॥२॥

३१

सनवरसरीआइवलहोपमसावली

तेलसमासे॥१॥दासावालककैका ३

तेकी॥मूसेकीमिगए पीसताती

करलावे॥१॥दाऊ ॥दास

वालककेपेटकीनिवासी की॥विलगिरी

टं१पाउस्वेतससतसेतीचेटावइ॥१॥

दूसरीविधासीदी॥लवंगटं१सरइटं

१सीधाटं१पिन्नपापडाटं१०औषध

पीसगोलीवेरप्रमाण करणी पाणीसतेल

लीवणी॥१॥दारूदमेकी॥केडाईटं१०तुदसाम

टं१०कोगकीवीटं१०समपीसपाणीमेदो

इकाली नीरा तन तिल अरू गुड दा पूतला व
णावणा। वगुल गुडदा धूप देणा ना पूतले अगे
गुडरख णा॥ १०१ मंत्र पढणा सवेरे ३ वके सम
पूरा विच रतटे॥ गुड बचावे॥ ४॥ | श्री कोलका

जंत्री सका | केलुदारस बुरमा॥ ॥ पुषा कि
मूला कि

| २० | ५ | ५ |
| --- | --- | --- |
| २ | ७ | १० |
| ८ | ८ | २ |

सुनवसरी डाइ वल से पम सावली

तैलसमास्रै॥१॥दारूबालकसैबका ३

तेकी॥ मूसे कीमिगएपीसताती

करलावे॥१॥दारूस [illegible] ॥दारू

वालकके पेटकी निवारी की॥ खिलगिरी

टं१ प्राउ स्वेत ससरसेती चटावइ॥१॥

दूसरी निवारी दी॥लवंगटं१हरडटं

१ सींधाटं१ पित्तपापडाटं१ए औषध

पीसगोलीवेरप्रमाण करणीपाणीसेती

लीवणी॥१॥दारू दमेकी॥केडाईटं१० तबद सा

टं१० कोंगकीवीटं१०समपीसपाणीमेंघो

ॐ नमः सरस्वती ॥ रस्मरस
॥ विष्णु ॐ स्पृ थि वै ३: प

कागरी पं बरौलि वृ ॥ गु मसा
॥ रा व ट का ३ व रौलि
बौलौ ह ता स
त लि व
रौ लौ रिल वि
गण स भाग
दौ ग्र क सुं


१ रवरव श्री मावस ७प्र श्व गंधा

घणाका

सुलि ७ मुनवंधे

तो साकि तो नला

ग क मर वाधे

तो घर रणमट

ले घर ॥ = ॥ —

| ७प्र ग | अग |
|---|---|
| ग्र र | ग्रश |




वंत नलकालि

रवरत

दिवाली की रात (ग) तन्न तिल अरु गुड दा पूतला व
णावणा॥ तगुल गुड दा धूप देणा ता पूतले आगे
गुड रखणा॥ १०१ मंत्र पठणा सावेरे उठके सभ
पूते विचनटै॥ गुड बनावे॥१॥ | ओं को लको

जं अ्वी सका | केलदारस सुरमा॥ ॥ पुषार्क
मूलाकं

| २० | ५ | ५ |
|---|---|---|
| २ | ७ | १० |
| ८ | ८ | २ |

आ को रू निमर दद्दा॥ बार अंगुल का कपड़ा बा
फते का॥४॥ सात वार आक के दूध मै सु कावे॥
सात वार धतूरे के रस मै सु कावै॥२॥ सात वार वि
सपटारे के रस मै सु कावे॥३॥ सात वार अंबीघार
ले धी के रस मै सु कावे॥४॥ पा कै गौ का घी ३ कडा सी
मै घाले पपसा भर॥ डोरा त कपड़ा घा लकर ३ त मै
निचोड दै॥ पा कै इंडी नचो पड करि॥३ पूना मघ
न चे पदे पा कै कपड़ा लपेटके कावे तो गे सोवंधे
तिन पटी तिन दिन ताई चड़ावे॥३॥ भीतर को ठ
डी मैर है॥ पक्ल गेहू की रोटी २ रुधाव पकार घी वा

लिषे

इकीस दिनतांई आसी पास न जाइ चंगा होवै ॥१॥

| १ | ८ | २ |
|---|---|---|
| ६ | २ ३ | २४ |
| ४ | २२ | ५ |

जेत्रे को सक भूता दि षुके ठ वांध ना भूता दि वा न जरका दोष जाइ सत्य ॥ जे जतो पलीता हे रोगी को माका नाम लिषे पलागीका वेटा या वेटी से सोइ लागा सो षाक होइ पर जे बंधो रे दीये जे लावे प्रेता दिमाण गल वांधे नजर न आवे तप वा लेके गल वंधे तप जाइ सत्य ॥ लिष तो १००१ दिन ४० कीर वषा हे श्री सत्य श्री ॥१॥१॥

उल्लू का पंष ॥ कऊयेका पांषलयउसपरय
ढेवार ॥ २१ २ कीसउेां रूपे ष जलते चूल्हे मे
डाले प्यारवालोकानाम लेप ठे पुरूषपु
रूष काइस्त्रीपुरूषका वा इस्त्रीइस्त्रीका प्यार
सेइतो कुटजाइ ॥ ॐ द्वेषे सो अतिवीर्जे इ छ
दपे स्वाहा ॥ इति ॥ सत्य ॥ १ ॥ पारा स्व व सोधि
या होइ या पथ सा भेर ॥ १ ॥ रूपडिसात
गालके निसादरनालसो धलप गा। सा धि
या होइ पा पथ सा भेर ॥ १ ॥ जिसत गा ल

का पारा पा देतिस की गोली बणावे वरा
केसपटक रके॥ आंच प्रमाण पंमे॥ सेर १॥ डे
ढ गोल्या की दी फेर सेर दो की दे फेर ढाई
सेर की दे॥ फेर तीन सेर की दे॥ फेर साढे ती
न सेर की देइ॥ फेर चार सेर की देइ॥ फेर प
उ साढे चार सेर दी॥ फेर पंज सेर दी॥ ७॥ फेर
साढे पंज सेर दी॥ ८॥ फेर छिय सेर दी॥ ९॥ फेर
सौढे छय सेर दो॥ १०॥ फेर सत सेर दी॥ ११॥
तव रखन होइ तव का ढके तोला तोला गोल

करतीटालेकेचनहोइ॥१॥सत्य॥१॥
वधपारेको॥खरीफुलकांसीदाकटो
रावणावेपयसेपजन्मरदा॥तिसदिचपा
रापयसेडुयन्नरपावेपाकेअंगुलीनाल
मलदारहैजवपारासोकजावेताउसबे
लूयेनूकेडाहीवीचररवेउसबेलूयेदेहै
ठलालेउदालेलूणसीघाकुटकेमरतीकरे
फेरकालेगधेदामूत्रपासररवे॥कडाहीनू
चुलैउतेचडावेरे ठस्यगलेबेलूयामूचे

दाभरेजवक्रोहुवलैवेतोफेरत्ररेइसातरे
बारा१२पहिरदेआंख्चेदूफेरवेलूयेन्ह
कठकेपीसलेबाचनतोलेपाउरती॥१॥
[illegible]ग्रांचपहिलेमठीपेरग्रांचमडकेदी॥१॥
॥१॥ धुमियार लैके जिसको ध्रती
देसो नक्रास के होइ॥१॥

काई लै कैवतीयावणावै गै लेरके दूध
मैभिगोवैतरकरकैफेरसुकायरषेसेत
वारभिगोरषैसुकायकेउबीविचपाइ
रषा५कुवतीलेसुकीवालेदीवेकापाणी
सोमरेपाणीकादीवाजतले।।गोरहलकीजड
लेकेसुकायकुटमयदाकरे।।कौरोदेदर
धवीचगोलीवणावेको... वेरसमान
सदरामेसिचपेसोवपेवुधेदसोवेहा।।
।।श्री कालकेवीजतेकेठीकरेउंजप्रेतेल
का६३सतेलविचजाेवी... वकेवीज

सोत्रुरुतेइरियासेवे सतिपुष्पफल ॥११॥ १५र

चारभर फटू कड़ी ॥ १ ॥ पद्य सामेर भुसककपूर

दोनेकोपीसके तावकीडुनीमेपावे फेर पावके

के पिचडीरिक दी दे विच पाइ देषि चडीकोलिया

दी दाल चावला दी कपूर व रो ॥१२॥

काली मासा१ फट कड़ी मासा१ माजूफल

तिने चीजा पीसके पोटली बणाय के खाका को

गदऊपर झाडे फेर पूक के ग्रन्द्रे रलिषेस्या

सेदा वन सत्ये है ॥ १॥

५.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४४६६६२ | ४४६६६६५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ६ ४४६६६६ | ४४६६६६५ |
| ४४६६६८ | ४४६६६३ | ८ | २ |
| ४ | ५ | ४४६६६५ | ४४६६६७ |

| ४४८८८ | ४४८८८ | ४४८८५ | ४४२८८ |
| --- | --- | --- | --- |
| २ | ८ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ६ | ५ |
| ८ | ३ | ८ | २ |
| ४ | ५ | ४ | ७ |

कोड ३

रतेको दा लहल द सिंगरफ वरावरि ले
के पाणी से पीस के लेपु कबर के हे को
अगन मे डारे षरे के कोटे से षरा होइ वार
तीन ॥ पारा दोइ मासे । सिंगरफ दोइ मासे ॥ तांबे
दे पत्रे चार मासे उना ने पारा चटावे बाकी दा पारा ना
ले सिंगरफ दे नाग ह ल र दे दुधवि च पीस के लेपु
पत्रिया उते करे ॥ फेरू कमारी ब छी का गोहा लैके
संपट वणावे फेरू उस मे पत्रे पाके उपर ह ल र दा दु
ध तार द फेरू दा नो संपट मेल के संपट कर सात सेर
दे गोसे मे फूको इ होम चकं ॥ १ ॥ १ ॥

रो दूमछीकासिरू लेकेताउडेमैरि दूफेरुरिस
दियाघ्योमोतीउतेत्ति रकेउतेआजांदेसे उ लोनू
लेकेसहरूदेवालना लछेकुकरे फेरूसघूरु
दीडबीमेदिनत्तिनरखेउ॥ फेर चाउ लचचलोउ
देउसरवलीविच्चपाइकेविचमोतीपाइकेदु
मुउतेलेकेडेजांदेचिटेहोवनताकढेसदा॥१॥
कुतेकादंतहोघीकबिलेकामनुष
दागघोदापंचादंतानेलेकेरवकारके
दिनपादिरतेडोवा सरहेरचउ

हे ठ ३ ते मनसिल दे

सा हाति पे फूके नाले ३ सत्त [illegible] दी

४२ मीटी पीस के पासर षे ३ घाट [illegible] ॥

ल्ही रचाते ॥१॥ मनसिल दोइ २ पय साभर

सिलद दोइ पयसा भर ॥ लैके के सहदे रस नाल

पुष्ठा दे च ३ दा २५ फेर तु काके पयस भर पारा

पयस भर सिका दुहा दे [illegible] ला ली करे पलास दी

उडन के के सवा ह पाति सा वि च धरे फूके कपडे

ठीकर के थी) मा [illegible] स्या मे बावन तोले इकु रती ॥२॥

कपूरबणावणविधि। कुंदरस लैणा मग्ग
के बणावेके रतपडउते घाहेसाफ करे। गरुनेबैप
पथ सात्र रमणकै॥ मं। नीठ कपड छाण दे
पथ सेमरा दें। मासे ५ सक कपूर।मासा
सिंगरफ। मासाकेसर। मासे ४ मोथा
कपडछाणा॥ ८ मासे अगरे हलेथी कु
पडछाण समर कजकरे तां केबरतनमें
पावे ऊपर मदतार दे सतदिन लिअव क
दवे॥१॥१॥

ॐ ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे

४३ ... ... ... सामर पाणी दे मे फुलावे॥ पंज सेर पाणी २/ गो का दुध पिलावे वा दीपकरं ३ आड़ ... ... ने

ने षा ... ... ... पिपलीलाखवि धारा ... ... ... करे प्रहर ॥ ... ... ... ऊपर ले पुकारे ताउ दे॥१०

एक की रात कौं राटू है उस समै ठीकरी
लैर ब्राणी भमियां के आगे ग्रिटै तावड़ा
फूके ॥२॥ हार एक डिया चाहै तो वकरा
ले उसको मार के खल उड़ा के उस
मास ऊपर वंखीआ सै वार चै सै सांपे
भर पी सव रे खार जागार ष फोर खाह
कवा वला होइ ॥१॥ भूर दा मै विंघ सै ॥ भू
तो दीआ है विच ॥१॥ तता पाणी इला जु ना
लै घोवे तो मिल वे ॥२॥

पासपयसामना। ह्मतालतवकोप ना।जिसत
षम मयसामर॥वाटेकारस थ१ऽ सवाखेरषरलक
रे ला लोवणावे के कारे डोडी या पा थीप
रदो लै णिपा६ कुपा णीजिस विच
हुडेउ ते व्वि चल ग गा गोहेना लति
पणी पाच ३ हो पा सी खं गिणा री
पा पयसामर ता बार तो ल म
३ १ च त्प॥२॥१

४४

वसतं३॥ २ ऐवकारकेदिनजोकुतेका
कीडफसियादेवेतिसऊपरकरकाकी
कठीभरमारेफेर चुएलेपाहरबेज
९६क्वासाइतह्लएकदा मन्हूवऊ
परसिटो॥४॥ जेघोडेकारं गुवदला
याम्चादेतंविलमुनकेडडपीसके
ऊपरवनेपटीदिनइतीन॥१०॥४॥

संदर सज्ञधसेर॥ कुटकेस्रवकपडम्भी
एकोर॥ केलेपाणीविचरावडीगम्
वेविचकेघार मासेछ्चार कंवीलामाप
चारकसतूरीमासामुसककपूरमासे
पावेफेरमंडुदेविच तांवेदेविच पावे
विचालेलोहेदेरंवपाउकचेदीचरु
सीपाउतेमचडाकेरषेबारमंडेदापावेदे
कुतणनालवंधकुडेमदीनेतिनः२५
दिन॥१॥ ओं॥ अथी धंम कीदी पालेकेतुरतम
ढोयकेवेसणमेउदेदुधविविगुरुकेगोपीयेको
लेउपसीगोलीकरतांअबीयाविचपापपेका॥ फ

रत्रष्ट दिनसुकावेन वमे दिन केरावु जाले के विचचा
वलसठी देमे डुदा दुधगोलीभन केञ्जा ने विचोक ठु
केतिनेघाकपाकेरि हेज दप ची होजानताना हसेष
रात वये र अिन देस्व रे उठ के का ठ ले काय लापुरा
णा पीस केसि घाडि पोदञ्जाटा साफी विचपाके मोती
विच पाके रुस फेर निरसि घाडियादाञ्जाटे विच रुसे
फेर सध्र रविच रुहेाा रत्यसे।। द ही मा दियो पडसेरद
सहेर पाणी विचपायके सप्पा ताल सीका णीभनेको
सिकारे तां बेट वंतोन विच रु डाय ये विच तावे दे पडेपा
उकाचे पावे पयसे दो मर फटकडी पीसके विचपा
वेदी पयसा भर नीला थोथा पीसके पावे प यसे
भरे ज मालनी बूंदे रस विचचासणीकरे उमलना
नकर के विच र तावे फेर से र ठाई सोरा उसवि

चड़ सेर पाणी पा दे उदपाणी सिजा इता
ता वे दी कड़े दी नाल (विच रलाय दे प
हिले इकुउ वालु देके फेर दी पक णा च दे व
च कड़ छी फेर दार से इड़ा दपिच डी हो जा इ
ता कड़छी नाल पला स देप त्रा उ मेपी दे फे
र ढकड़ कूडे परात ना ल रातपया र सि नदे

॥ वसधूप ॥ वच एला नाग केशर कूट ते रदे
स्वेत सर स व राल स म मेले धूप कीजे इसी वस्य से
इ कार्य सिद्धि ॥ २ ॥



यकेनेकोडुबद्वा
शरदत्ति यदमि हिनन्तवराय
दकोचहारमनेशपंचम
ने धरादबबमैकोबलेडुरबादर॥ वरफ
तमकामदिलयावदा॥ रवौ दिने
मोरकी वीढा॥ कबूतर चाढ॥
मुर्गे की वीढ॥ दरे ताल चारव
सेपासकररव वैरीनष्टेस
ढेत॥

॥
की लाकीदरू॥सरि रोरि धाल।
उवच ए ओ चध सस माई ग्गा नि॥उल
सेका व धन डुले पीघेपपकी लाका जानु॥१॥
छापाका दरू॥ सारण॥ ~~क~~
जीराजारा हरि
छोली रातिल साम
पथ्थे ले पडुडाम
सा पीत पुणि
॥१॥ कमतेरी कपर
पुघकी छाई नारदे
जौनि वीचिन वेद
समगोली केरम धपाई
॥१॥ दास्ताले
छिचै सी हरि बतमाई
रक पका॥ सा
की॥ पयाराभर सिंगर
लीडौना
ककौ तडकी छीलिसैहाम